

1998/07/14 10:00 AM





चित्र : हर बल्लभ सिंह खन्ना, छठवीं, रायतपुप, भिण्ड

इस अंक में

पाठक लिखते हैं/चकमक दोस्त	2
मेरा पत्रा	3
कहानी : अक्ल बड़ी या भैंस?	4
गिजुभाई की कलम से	7
सवालीराम	10
मच्छर से लड़ाई	11
मेरा पत्रा	16
चित्र : भारत जनविज्ञान जत्था	17
अपनी प्रयोगशाला	23
इशान के चित्र, दुनू की कविता	24
मेरा पत्रा	26
मानव की कहानी	27
एक मज़ेदार खेल	32
कहानी : कुक्कड़-खूं	34
मेरा पत्रा	37
माथा पच्ची	38

चकमक ज्ञान विज्ञान पत्रिका
वर्ष 3 अंक 8 फरवरी, 1988

संपादक:

विनोद रायणा

संपादक सहायक:

राजेश उत्साही, हरि कोशी

कलम:

जय विवेक

उत्पादन/वितरण

हिमांशु निरवास, कमलसिंह

चकमक का चंद्र

कमाली: 15 रुपए

कार्तिक: 30 रुपए

शुक्र कार्तिक शुक्र

चंद्र, मनीषाईर या बैंक ड्राफ्ट

से एकलपत्र के नाम पर भेजें।

कृपया चेक न भेजें।

पत्र/संज्ञा/रचना भेजने का पता:

एकलपत्र

ई-1/208, अरेंज कालोनी

भोपाल-462 016 (म.प्र.)

एकलपत्र एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलपत्र द्वारा प्रकाशित अध्ययनसाथिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

पाठक लिखते हैं

चकमक का नवंबर 87 अंक पढ़ा। रोचक लगा। 'हरियाली ही हरियाली' में विज्ञान को जिस रोचक आकर्षक, बोधगम्य और सहज ढंग से प्रस्तुत किया गया है वह अत्यंत ही सराहनीय है। ऐसे लेखों की संख्या बढ़ाएं। 'बदरा पानी दे...' की काव्य पंक्तियां अन्तर्मन को छू गईं। यह पत्रा अगस्त के अंक में दिया होता तो अच्छा रहता। 'खेल खेल में कला' का छायांकन तो सुंदर लगता है परंतु वास्तविक कला कैसी लगती होगी? क्या 'मोनलिसा' का कलारूप जैसा फोटो में लगता है वैसा उनका वास्तविक रूप (चप्पल से बना हुआ) लगता होगा?

'वर्षगांठ' सबको पसंद आई।

□ डा.आर.बी. भंडारकर, राजपुर (रायगढ़)

चकमक में बहुत ही उपयोगी सामग्री रहती है। साथ ही कुछ ऐसी सामग्री भी होती है जिनसे बड़े भी लाभ उठा सकें। माथापच्ची में बच्चों को क्या, बड़ों को भी माथापच्ची करना पड़ता है।

□ व.अ. कुरैशी, कुराई, सिवनी, उन्नति तोमर, श्याम आश्रम, रखड़

1. गौतम, पाचवीं
2. विडिओ देखना, कहानी पढ़ना, चित्र बनाना
3. प्राथमिक शाला, मालाखेड़ी, हांशगाबाद

1. राजेश राठौर
2. टी.बी. देखना, चकमक पढ़ना
3. चौक बाजार, पंधाना, खंडवा

1. मोहम्मद आबिद शोख
2. अच्छी किताबें पढ़ना, क्रिकेट खेलना, चकमक पढ़ना
3. मोहम्मद अय्यूब रिजवी, नार्थ चांदामेटा, छिंदवाड़ा

1. राधेश्याम, 11 वर्ष
2. चित्र बनाना, मूर्ति बनाना
3. पूर्व मा. शाला, उरगा, कोरबा

1. संदीप बिरथरे, 12 वर्ष
2. चित्रकारी, तैरना
3. अमझेरा, धार

1. मुकुल सप्रे, 12 वीं
2. टी.बी. देखना, सायकिल चलाना
3. जवाहरसिंह की पायगा, चित्रा 'टॉकीज के पीछे, नई सड़क, लश्कर, खालियर

1. लाखनसिंह चौहान, 16 वर्ष
2. मित्र बनाना, घूमना, फोटो लेना
3. मसजिद गली, हातोद, इंदौर

चकमक के अक्टूबर-87 अंक में 'समावेश' विषयक सामग्री अत्यंत रोचक रही। 'धातु-धरेलू तरीके' लेख पढ़कर विस्तृत और उपयोगी जानकारी मिली तथा 'अपनी प्रयोगशाला' की सभी विधियां भी सराहनीय लगीं।

आम आदमी तक विज्ञान को पहुंचाने के लिए आवश्यक है कि 'समावेश' जैसे शिविर भारत के हर शहर, हर गांव में लगाए जाएं। हालांकि 'भारत जन विज्ञान जल्ये' ने इस आवश्यकता की पूर्ति में प्रशंसनीय योगदान दिया है, लेकिन यह कुछ गिने-चुने शहरों तक ही सीमित रहा। जल्ये का जयपुर में कार्यक्रम देखा तो चकमक के 'समावेश' अंक की सार्थकता और भी समझ आई। बधाई!

□ अनिल राठौड़, चुरु, राजस्थान

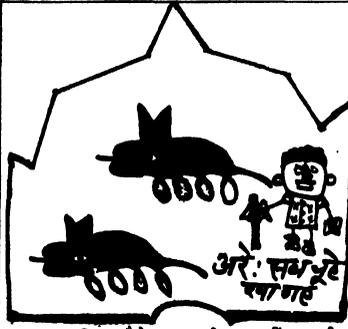
प्रेरणा मेरी पुत्री है जो कक्षा तीसरी की छात्रा है। पढ़ाई के प्रति उसमें प्रारम्भ से ही अरुचि थी। शायद इसकी वजह मेरे विचार से शाला का नीरस वातावरण तथा पढ़ाई का घिसा-पिटा रवैया हो सकता है। एक शिक्षक के बच्चे पढ़ाई में फिसड़की रहें, इससे बड़ी त्रासदी शायद कोई नहीं है। अतः मैंने बच्ची को अध्ययन की तरफ प्रेरित करने के उद्देश्य से कई उपाय किए हैं। इन्हीं में से एक उपाय चकमक पत्रिका है। चकमक मैं प्रतिमाह पढ़ने को देता हूँ। उसमें छपे रंगीन, चित्ताकर्षक चित्रों के बारे में समझाता हूँ और कहानियां, कविताएं

पढ़ने हेतु बालिका को उत्साहित करता हूँ। मेरा यह तरीका कारगर साबित हुआ है। प्रेरणा के साथ-साथ मेरी अन्य दो छोटी बच्चियां भी चकमक बड़े चाव से उलटती-पलटती हैं। प्रेरणा को अध्ययन के प्रति लगाव उत्पन्न करने में चकमक का योगदान निस्संदेह सराहनीय है। मैं चकमक का आभारी हूँ।

□ मदनलाल वैद्य, शिक्षक, तवानगर

चकमक पढ़ता रहता हूँ। उसमें दिए जाने वाले चित्र बेहद घटिया हैं। आजकल इन चित्रों को प्रकाशित करना बेगार टालने जैसा है। कहानियां भी शिक्षाप्रद व मनोरंजक नहीं हैं। पुस्तक आशा के प्रतिकूल प्रभाव छोड़ती है। प्रकाशन उम्दा कहानियों, सचित्र कहानियों से ओत प्रोत होना चाहिए। आवरण पृष्ठ के चित्र ही प्रकाशन की पोल खोल देते हैं। बेकार चित्रकारों को सिर आंखों पर उठा लेने की प्रथा बंद होनी चाहिए। अन्य शिक्षकों, लेखकों को लेखन सामग्री हेतु आमंत्रित किया जाना चाहिए। नवंबर 87 के अंक के पिछले आवरण का चित्र शीर्षक 'हरियाली काटो, सूखा लाओ' सरकार की कितनी हंसी उड़ाता है, कैसी प्रेरणा देता है आपको इसका भान नहीं है। कृपया ध्यान रखें।

□ वर्मा, अध्यक्ष अखिल भारतीय आदिय जन जाति युवा सोसायटी, अंजंड (प. निमाड़)



चकमक दोस्त

1. नाम
2. रुचियां
3. पता

1. वीरेंद्र सिंह, 13 वर्ष
2. पढ़ना, खेलना, पत्र मित्रता
3. द्वारा आर.एम.सिंह, प्रधानाध्यापक, शा.मा. शाला मौहरी, शहडोल

1. सूर्य नारायण भट्ट, 12 वर्ष
2. क्रिकेट खेलना, फुटबाल खेलना
3. नीम चौराहा, अमलेटा, रतलाम

1. चुड़ामणि रात्रे, 10 वर्ष
2. चकमक पढ़ना, खेलना.
3. शासकीय प्राथमिक शाला धाराशिव, पो. लच्छनपुर रायपुर

1. मुकेश पोरवाल
2. चकमक पढ़ना, व्यापार
3. मा.वि. डेलची बुजुर्गा, उज्जैन

1. चेतना राका, सातवीं
2. पढ़ना, मॉडल बनाना, खेलना, शारतें करना
3. शा.क.मा.वि. नामली, रतलाम

1. वीरभद्र सिंह सोलंकी, आठवीं
2. खेलना, सायकिल चलाना
3. माध्यमिक विद्यालय, खंडलाई

1. रमेशचंद्र अहिरवार
2. पत्र-पत्रिकाएं पढ़ना, घूमना, दोस्ती करना
3. रा.उ.मा.बा. विद्यालय जंगपुरा, नई दिल्ली-110 014

1. ए.के. मसीह, 18 वर्ष
2. क्वालीबाल खेलना, पत्र-पत्रिकाएं पढ़ना
3. पो. सुनवाहा, क्वाया बेगमगंज, रायसेन-464 881

चकमक

मेषपन्ना



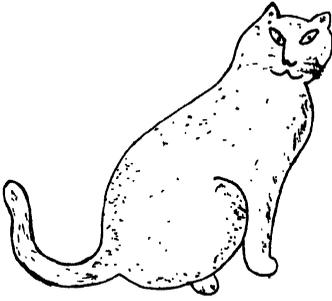
चित्र : संतोष जंघेल, नवमी, खुडमुडी, राजनांदगांव

पेड़ आम का

जहां खेत की मेड़
लगा है आम का पेड़
मुझे मत पत्थर मारो
मैं हूं आम
अरे मैं प्यार की ठौर हूं

सुगंध से इठलाते हैं बौर
कोयल रानी आती है
तुमको गाना सुनाती है
मन लुभाती है मेरी छांव
फलों को उठती सबकी बांह!

□ संदीप सर्रेठा, खैरवाड़ा, छिंदवाड़ा



चित्र : मुकेश महता, नवमी, धरगांव, खरगोन

चतुर बिल्ली



चित्र : पंकज पायक, चौथी, मंदसौर

एक दिन शाम के समय एक भूखी लोमड़ी भोजन की तलाश में निकली। वह एक बिल्ली को खेलते देख कर बहुत खुश हुई और बोली, “वाह मैं तुम्हें खा कर अपनी भूख मिटाऊंगी।”

बिल्ली बहुत चतुर थी। वह बड़ी विनम्रता से बोली, “कृपया मुझे न खाइए, मैं छोटी हूं। मैं आपको वह स्थान दिखाऊंगी जहां एक किसान प्रतिदिन मक्खन रख जाता है। उसे खा कर आप अपनी भूख मिटाना।”

लोमड़ी तैयार हो गई। बिल्ली लोमड़ी को एक कुएं के पास ले गई। कुएं के जल में चमकते हुए चंद्रमा की परछाई को दिखा कर बोली, “यह है मक्खन आप इसे खाइए और भूख मिटाइए।”

उसे देखते ही लोमड़ी के मुंह में पानी आ गया। वह बिना सोचे-समझे झट से कुएं में कूद पड़ी और वहीं डूब कर मर गई।

□ ओमप्रकाश चंद्राकर, सातवीं, लखन, रायपुर

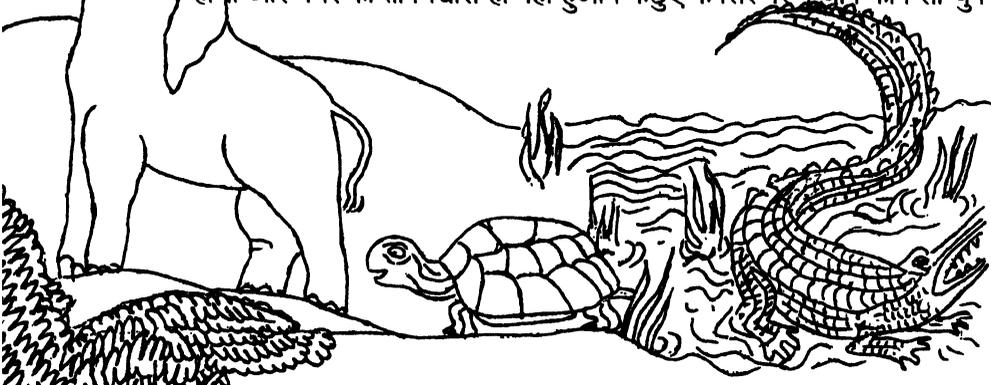
अक्ल बड़ी या भैंस?

एक था हाथी और एक था मगर। हाथी जंगल का राजा था और मगर नदी का राजा था। दोनों में खूब दोस्ती थी।

एक दिन दोनों मित्र नदी किनारे बैठ कर अपनी-अपनी ताकत की बड़ाई कर रहे थे। उनके पास ही एक कछुआ बैठा हुआ उनकी बातें सुन रहा था। उसे न जाने क्या सूझा, वो हाथी और मगर के सामने आकर बोला, “आप दोनों जैसा बलवान सचमुच दुनिया में दूसरा नहीं है। पर क्या आप मेरे साथ एक शर्त लगाएंगे।”

इस पर दोनों साथी खिलखिला कर हंस उठे। हाथी ने हंसते-हंसते पूछा, “तुम किससे शर्त लगाओगे या मगर भाई से।” कछुए ने कहा, “आप दोनों से। मैं जानना चाहता हूँ कि हम तीनों में सबसे बलवान कौन है?”

हाथी और मगर को तो विश्वास ही नहीं हुआ। कछुए के सिर पर न जाने कौन सी धुन सवार थी!



पर फिर भी हाथी ने पूछा, “अच्छा तो पहले किससे शर्त लगेगी।”

कुछ देर सोच कर कछुआ बोला, “पहले हाथी भाई से।”

हाथी चिंघाड़ कर बोला, “तो तैयार हो जाओ लड़ने के लिए।”

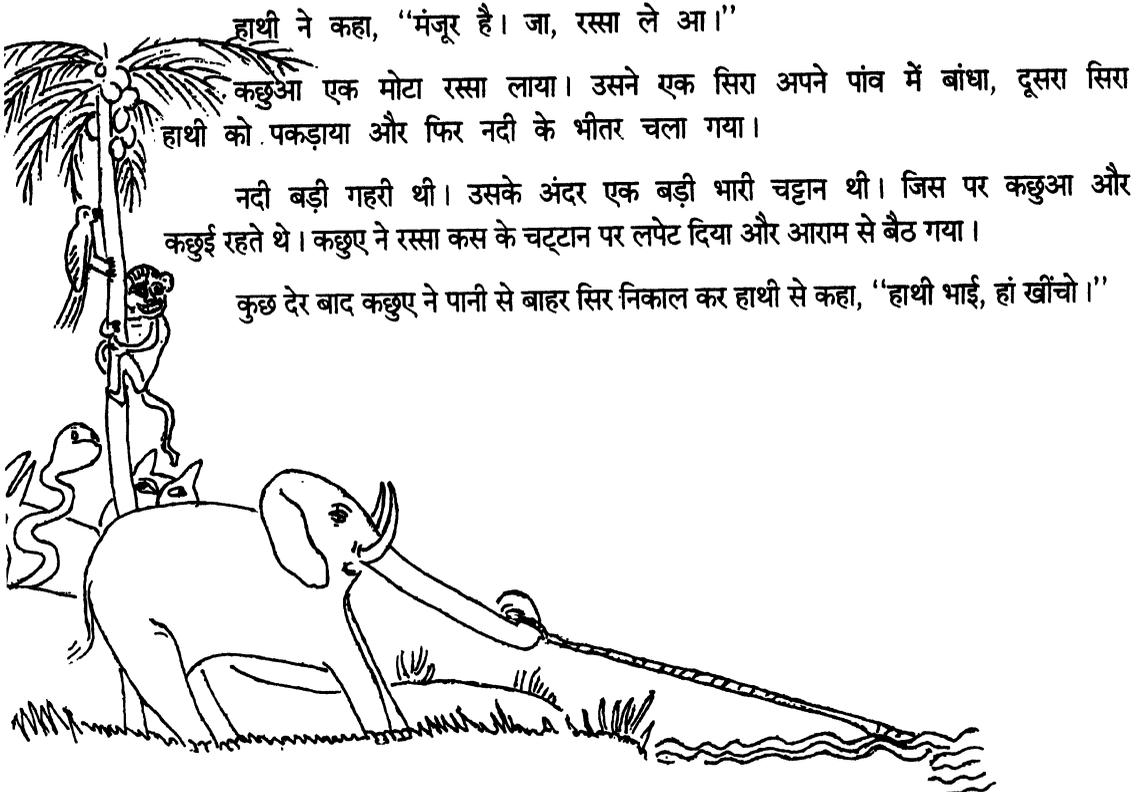
कछुए ने कहा, “मैं तो तैयार हूँ लेकिन हम कुश्ती नहीं लड़ेंगे।”

“हैं! कुश्ती नहीं लड़ेंगे? तो फिर क्या करोगे?” हाथी ने पूछा।

कछुए ने समझाया, “देखिए, हम दुश्मन तो हैं नहीं। और न ही दुश्मनों की तरह लड़ेंगे। बस हमें तो ताकत की जांच करनी है।”

“वो कैसे करोगे?” हाथी ने टोका।

“ऐसा करेंगे कि मैं अपने पांव में एक रस्सी बांधकर पानी में चला जाऊंगा और आप उस रस्सी का दूसरा छोर पकड़ कर मुझे बाहर खींचेंगे। यदि आप ने मुझे खींचकर पानी से बाहर निकाल लिया, तो आप जीते और मैं हारा। और न निकाल सके तो मैं जीता। मंजूर है?”



हाथी ने कहा, “मंजूर है। जा, रस्सा ले आ।”

कछुआ एक मोटा रस्सा लाया। उसने एक सिरा अपने पांव में बांधा, दूसरा सिरा हाथी को पकड़ाया और फिर नदी के भीतर चला गया।

नदी बड़ी गहरी थी। उसके अंदर एक बड़ी भारी चट्टान थी। जिस पर कछुआ और कछुई रहते थे। कछुए ने रस्सा कस के चट्टान पर लपेट दिया और आराम से बैठ गया।

कुछ देर बाद कछुए ने पानी से बाहर सिर निकाल कर हाथी से कहा, “हाथी भाई, हां खींचो।”

हाथी ने सोचा कछुए को खींचने के लिए जोर लगाने की ज़रूरत ही क्या है? उसने पहले थोड़ा सा खींचा, फिर और खींचा, फिर पूरी ताकत लगा दी पर रस्सा तो हिला ही नहीं।

अब तक वहां और सारे जानवर इकट्ठा होने लगे थे। उन्हें देख कर हाथी को और गुस्सा आया। उसने इतने जोर से झटका मारा कि रस्सा खट से टूट गया और हाथी धड़ाम से गुलाटी खा कर ज़मीन पर गिर पड़ा।

सारे पशु-पक्षी ही-ही, हा-हा, हू-हू, हे-हे करके हंस पड़े। हाथी सिटपिटा कर रह गया।

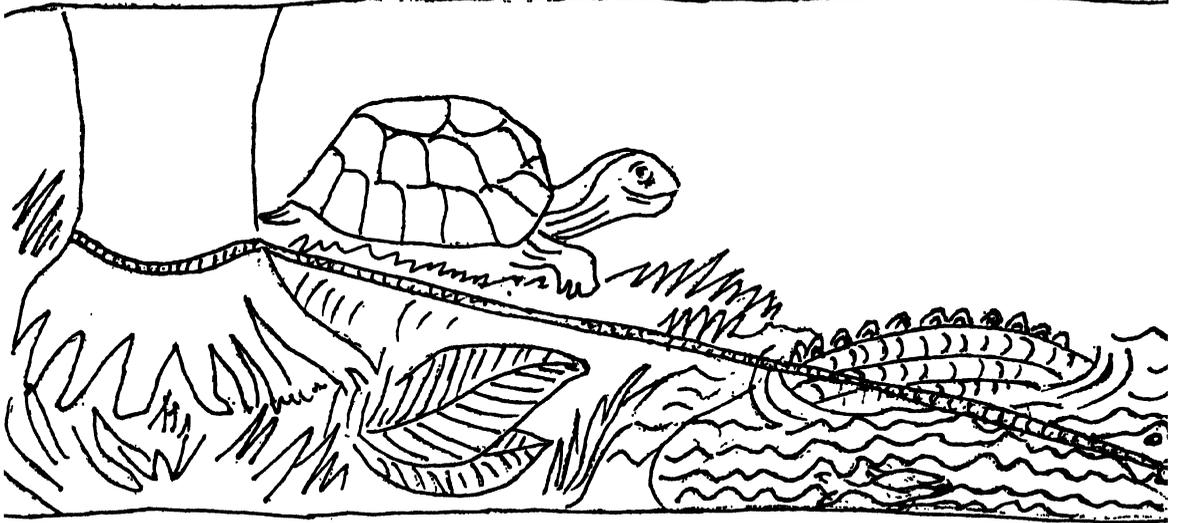
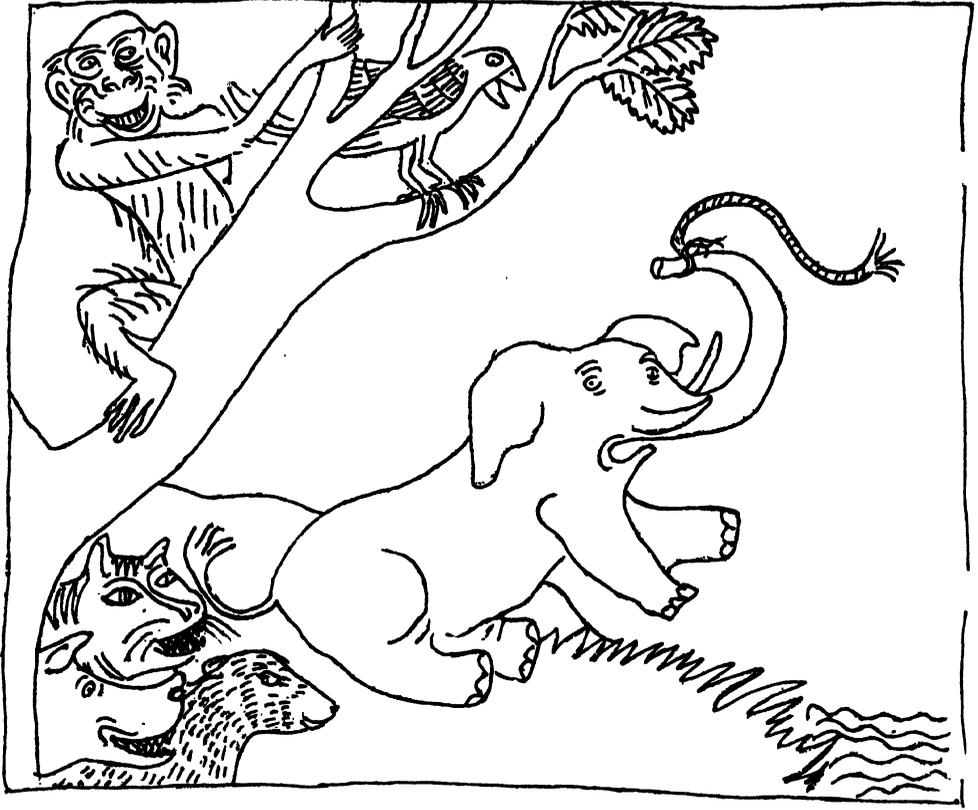
अब आई मगर की बारी। वह अपने साथी की हालत देखकर गुस्से से कांप रहा था। उसने जोर से कहा, “कछुए अब मैं तेरे को मज़ा चखा कर रहूंगा। रस्सा ला!”

कछुए ने कहा, “जी, समझा मगर भाई। पर इस बार मैं ज़मीन पर रहूंगा। और आप नदी में। मंजूर है न!”

“हां, हां! मैं भी यही कहने वाला था। अब जल्दी रस्सा ला।”

कछुआ अब और मोटा रस्सा ले आया। एक छोर अपने पांव पर बांधा और दूसरा मगर को दे दिया। मगर तुरंत अपना छोर पकड़ कर छप्प से पानी में कूद पड़ा।

इस बार कछुए और मगर का दंगल देखने के लिए सभी पानी वाले जानवर इकट्ठा हो गए। उधर हाथी अभी भी इतना गुस्सा था कि उसने ज़मीन वाले सभी जानवरों को वहां से भगा दिया और खुद भी चला गया।



कछुए ने देखा कि वहां कोई नहीं है तो उसने तुरंत रस्से को बड़े से पेड़ के चारों ओर लपेट दिया। और फिर कछुआ ज़ोर से चिल्लाया, "तैयार मगर भाई, खींचो।"

अब बताओ कि फिर आगे क्या हुआ होगा?



गिजु भाई की कलम से.. मैना

"छोटे काकाजी! क्या आपको याद है कि जब हम उस दिन अहमदाबाद से वापस आ रहे थे, तो अहमदाबाद के स्टेशन पर मैनाओं ने कितना शोर मचा रखा था। इन मैनाओं से तो मेरा मन तौबा ही करना चाहता है।"

"अच्छ, ऐसी बात है?"

"ऐसी न होगी, तो और कैसी होगी? मुझको तो इन मैनाओं की बोली जरा भी अच्छी नहीं लगती। ये लगातार बोलती और किचकिच करती रहती हैं।"

"शांति, सुनो! सब मैनाएं ऐसी नहीं होतीं। उनमें कुछ तुम्हारी मंजुला काकी की तरह मंजुल बोलने वाली होती हैं। और, कुछ तो हमारी लक्ष्मी बहन की तरह भांति-भांति की बोलियां बोलने वाली भी होती हैं।"

"सुनिए, छोटे काकाजी! मैं तो सब मैनाओं को एक-सी मानती हूँ। सब झगड़ालू, सब किच-किच करने वाली और कलह मचाने वाली होती हैं। जब इनको सारे दिन फुरसत रहती है, तो या तो ये झगड़ा मचाती हैं या निंदा करती हैं।"



"तुम्हारा यह ख्याल सही नहीं है। आओ मेरे साथ आओ। मैं तुमको मैना की बोलियां सुनाऊँ।"

छोटे काका जी और शांति दोनों गांव के बाहर सचाई का पता लगाने पहुंचे।

दोनों नीम के एक पेड़ के नीचे बैठे। थोड़ी देर के बाद शांति ने पूछा, "काकाजी, तोते की-सी आवाज़ में यह कौन बोल रहा है?"

कुछ देर के बाद उसने फिर पूछा, "छोटे काकाजी! जरा सुनिए, यह चिड़िया की तरह कौन बोल रहा है?"

शांति ने फिर कहा, "छोटे काकाजी, आइए, हम देखें कि यह कौन सा नया पक्षी है जो तरह-तरह की बोलियां बोल रहा है?"

"अरे पगली, सुनो यह तो मैना है। मैंने तुमसे कहा था न कि मैनाएं भी मीठा बोलती हैं।"

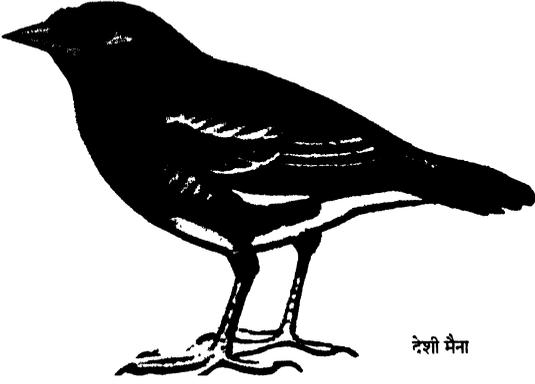
"पर ये बैठी कहां है?"

शांति और छोटे काकाजी ने चारों तरफ निगाह दौड़ाकर देखा। उन्होंने देखा कि दो मैनाएं नीम पर, दूसरी दो बाड़ के पास के एक पेड़ पर और तीन-चार मैनाएं थोड़ी दूर पर खड़े इमली के एक पेड़ पर बैठी थीं।

छोटे काकाजी ने कहा, "अब तुम इन मैनाओं को देखो और सुनो कि ये क्या बोलती हैं।"

शांति ने कान लगा कर सुनना शुरु किया।

"छोटे काकाजी! आपकी बात सही है। लेकिन यह कैसे अचरज की बात है कि ये मैनाएं कितनी नई-नई बोलियां बोलती हैं। ये तो अलग-अलग पक्षियों की बोलियों जैसी बोलियां बोल लेती हैं। और, बीच-बीच में ये इतनी कोमल और मीठी बोली बोलती हैं कि 7



देशी मैना

सुनकर दंग रह जाना पड़ता है। और, कभी-कभी तो मुझको ऐसा लगता है, मानो मेरी छोटी काकीजी मेरे साथ हंस-हंसकर बोल रही हों।”

“इसीलिए मैंने कहा था कि सब मैनाएं एक-सी नहीं होती। मैना में अनुकरण करने की बढ़िया शक्ति होती है। ये मैनाएं दूसरे पक्षियों की बोलियां भी बोल लेती हैं। जब ये झगड़ना शुरू करती हैं, तो सुनने वालों का सिर खा डालती हैं। लेकिन जब ये अपनी मस्ती में मस्त होती हैं, तो बड़े मजे की मीठी बोली बोलती रहती हैं।”

“हां, ये हमारी गंगा मौसी से बहुत मिलती-जुलती लगती हैं। जब वे गुस्सा होती हैं, तो बहुत ही बुरी बोली बोलती हैं। लेकिन जब खुश होती हैं, तो इतना मीठा बोलती हैं कि पूछो न बात।”

“इसी तरह ये पक्षी भी कभी गुस्सा होते हैं, और कभी खुश भी होते हैं। इस मैना का भी ऐसा ही स्वभाव है।”

“छोटे काकाजी! मुझको लगता है कि लोग नाहक ही मैना की इतनी निंदा करते हैं।”

“हां, बिना जाने-समझे ही लोग ऐसा करते हैं। पक्षियों के बारे में उनको सही जानकारी होती नहीं, इसलिए जो भी मन में आता है, सो कहते रहते हैं। यह मैना तो अपनी जगह है ही। लेकिन एक और किस्म की मैना होती है, जिसको ‘जंगल मैना’ कहा जाता है। जो मैना हमको अपने आसपास दिखाई पड़ती है, उसको लोग ‘देशी मैना’ ही कहते हैं। मैना की एक और किस्म को ‘ब्राम्हणी मैना’ कहा जाता है। मैना की एक तीसरी किस्म भी होती है, जो ‘तट मैना’ कहलाती है। इस ‘तट मैना’ को कुछ लोग ‘गंगा मैना’

भी कहते हैं। ब्राम्हणी मैना को ‘पवाई’ भी कहा जाता है। मैना की एक चौथी किस्म भी होती है, उसको ‘अबलक मैना’ कहते हैं।”

“आहा! इस मैना की कितनी किस्में होती हैं। मैंने तो एक ही मैना देखी है। आप मुझको दूसरी मैनाएं दिखाएंगे?”

“हां, कभी मौका मिला तो जरूर!”

मैं दवाखाने जा रहा था। रास्ते में मैनाओं का शोर सुना। पांच मैनाएं नीम के पेड़ पर बैठी-बैठी इतना शोर मचा रही थीं कि पूछो न!

मैनाएं जब अपनी मस्ती में होती हैं, तो सचमुच ही वे बहुत मीठी बोली बोलती हैं। लेकिन आज तो वे बड़ी तीखी बोली बोल रही थीं।

मैं सोचने लगा, ‘आज इन मैनाओं को क्या हो गया है कि ये इतना तीखा शोर मचा रही हैं?’ मैंने आसपास निगाह डाली, तो वहां न तो कोई भुजंगा था, और न कोई अन्य शिकारी।

मैंने एक बार फिर निगाह दौड़ाई, तो देखा कि एक पोखरे में एक बिल्ली पानी पी रही थी। मैनाएं उसकी ओर देख-देखकर और अपनी गरदनें आगे बढ़ा-बढ़ा कर तीखी आवाज़ में बोल रही थीं। बिल्ली बड़े आराम से अपनी जीभ बाहर निकालकर चप-चप आवाज़ के साथ पानी पी रही थी।

मैनाएं भारी शोर मचाकर दूसरी मैनाओं को खबर पहुंचा रही थीं, ‘खबरदार! खबरदार! खबरदार! बिल्ली बाई आई हैं। सब होशियार हो जाओ! नहीं तो बिल्ली बाई की चपेट में आ जाओगी।’



ब्राम्हणी मैना

बिल्ली को देखकर मैनाएं इतना तीखा शोर मचाती हैं कि उसको देखकर हर कोई चौकन्ना हो उठता है। बाद में मैंने बिल्ली को भगा दिया। जब बिल्ली चली गई, तो मैनाएं भी तुरंत चुप हो गईं।

पिछले हफ्ते में मैनाओं के बच्चे अंडों के बाहर निकल आए थे। उनको खिलाने-पिलाने के लिए मैनाएं कीड़ों की खोज में निकल पड़ी थीं। वे अपनी चोंचों में कीड़ों को दबाकर अपने-अपने घोंसलों की तरफ उड़ गईं। मैं दवाखाने के रास्ते आगे बढ़ा।

जब मैं दवाखाने से लौटा, तो मेरे बच्चों ने मुझसे कहा, “पिताजी! आज तो आप हमको मैना के बच्चे ज़रूर ही दिखाइए। हम निसैनी ले आए हैं। हमको मैना के नन्हें-नन्हें बच्चों की नन्हें-नन्हें चोंचें और उनके नन्हें-नन्हें पंख देखने हैं।”

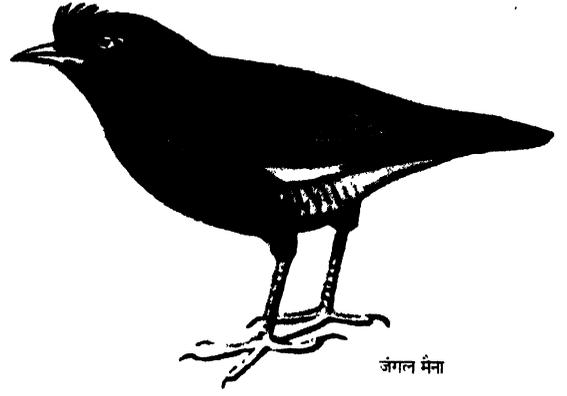
मेरे ही घर की दीवार और छप्पर के बीच की जगह में मैना का एक घोंसला था। घोंसले में मैना के दो बच्चे थे।

हम अभी बात कर ही रहे थे कि इतने में मैना अपनी चोंच में कीड़े भरकर लाई। तभी घोंसले के अंदर बच्चों ने अपनी कभी धीमी और कभी तीखी आवाज़ में बोलना शुरू कर दिया। अपनी चोंचें खोलकर बैठे बच्चे अपनी मां को आया देखकर बहुत खुश हो गए। अपनी इस खुशी में वे तीखी आवाज़ में बोलने लगे। मैना ने अपनी चोंच खोली और बच्चों का मुंह कीड़ों से भर दिया। कुछ देर के बाद मैना फिर घोंसले के बाहर आई और वह कीड़े चुगने के लिए उड़ गई।

निसैनी पर चढ़कर मैंने बच्चे देखे। बच्चे अभी बहुत ही छोटे थे। चोंच पीली और छोटी-सी थी। पंख अभी पूरी तरह फूटे नहीं थे। अपने घोंसले में वे पास-पास बैठे थे। उनके छोटे-छोटे पेट हिल रहे थे। उनके पर अभी निकले नहीं थे। इसलिए उनके पेट की चमड़ी दिख रही थी। छोटे बच्चों ने मेरी तरफ देखा, और वे मुझको ताकते रहे। उन्होंने सोचा होगा, ‘अरे यह कौन है? यह मां तो नहीं है। यह बाप भी नहीं है।’

बाद में नन्हा नटवर निसैनी पर चढ़ा और उसने बच्चे देखे। नटवर के बाद विनोद ने देखे। विनोद के बाद विदुला ने देखे।

इसी बीच मैना उड़ती-उड़ती आई और अपने घोंसले के आसपास चक्कर लगाने लगी। मुझको लगा



जंगल मैना

कि वह अभी हमारे सिरों पर अपनी चोंच चलाएगी। हम झटपट नीचे उतर पड़े और मैना अपने घोंसले के अंदर गई। बाद में तो हम बार-बार घोंसले में बैठे बच्चों को देखने लगे। हमारे देखते-देखते बच्चे बढ़ते गए, और फिर एक दिन ऐसा भी आया कि मां-बाप और बच्चे सब घोंसला खाली करके वहां से चले गए।

पहले उड़कर वे हमारे सामने खड़ी थूहर की बाड़ पर बैठे। वहां बैठे-बैठे वे किच-किच की आवाज़ में बोलते रहे। बिल्ली के दिखने पर वे जैसी आवाज़ में बोलते हैं, उसी आवाज़ में बोल रहे थे।

मैंने सोचा कि मैना अपने बच्चों को सिखा रही थी कि बिल्ली के दिखने पर कैसी आवाज़ में बोलना चाहिए। उस समय मैं यह सोच ही नहीं पाया कि उन मैनाओं को कहीं अपना कोई दुश्मन दिखाई पड़ा है। मैं वैसे ही खड़े-खड़े देख रहा था कि इतने में वे मैनाएं कर्कश आवाज़ करती हुई नीचे ज़मीन की तरफ उड़ीं और ज़मीन पर चल रहे किसी जीव पर उन्होंने अपनी चोंचें चलाईं। जब मैंने ध्यान से देखा, तो पता चला कि वह एक नन्हा-सा सांप था। तभी मैं समझा कि सांप को देखकर मैनाएं सबको खबर दे रही थीं कि भागो! चेत जाओ! चेत जाओ! सांप आ रहा है। मैना और उसके बच्चों ने सांप का इतना पीछा किया कि उसके लिए जान बचाना मुश्किल हो गया। आखिर सरपट दौड़कर वह करील की झाड़ी में घुस गया।

सांप को भगा देने के बाद मैना अपने बच्चों के साथ थूहर की बाड़ पर से उड़कर नीचे ज़मीन पर आई।

आगे-आगे मैना थी और पीछे-पीछे उसके बच्चे थे। मैंने सोचा, ‘अब देखना चाहिए कि यह मैना अपने बच्चों को क्या सिखाती है।’



□ मनुष्यों की तरह जानवरों का दिमाग भी विकसित क्यों नहीं है?

— कमलेश चौधरी, दसवीं, तवानगर, होशंगाबाद

□ तुमने पशु-पक्षियों के बारे में कई किस्से-कहानी सुने होंगे। सरकस में भी जानवरों के करतब देखे होंगे। बिल्ली को बहुत होशियारी से घर में घूमते देखा होगा। कभी किसी तोताराम ने तुम्हें कमलेश कहकर पुकारा होगा। पर मनुष्यों की तरह ये अपने सभी गुणों का उपयोग करते हैं, ऐसी बात नहीं है। सोचने-समझने और निर्णय लेकर नया काम करने वाला दिमाग जानवरों में नहीं है। मनुष्यों की तरह अन्य प्राणियों में दिमाग का विकास क्यों नहीं हुआ? क्या विकसित हो सकता है? इन सवालों का उत्तर कई लोग खोज रहे हैं। ऐसे प्रयोग किए गए हैं जिनसे पता चलता है कि जानवर अपने दिमाग का कितना उपयोग करते हैं। मनुष्यों की तरह इनमें गुणों का कितना विकास किया जा सकता है। ऐसे ही कुछ उदाहरणों की मदद से तुम्हारे सवाल का उत्तर खोजने का प्रयास करते हैं।

मास्को (रूस) के एक चिड़ियाघर में अफ्रीका से लाए गए बेइसा जाति के हिरणों को एक बड़े बाड़े के एक भाग में रखा गया। बाड़े के चारों ओर लोहे के तारों की

मजबूत फेंसिंग थी। बीच से एक अन्य फेंसिंग द्वारा दो भागों में बांटकर एक भाग में हिरणों को रखा गया था। शुरु में हिरणों ने बाड़ से निकलने का काफी प्रयास किया, पर बाद में उन्होंने यह प्रयास बंद कर दिया। कुछ दिनों बाद चिड़ियाघर के लोगों ने बाड़े को दो भागों में बांटने वाली फेंसिंग को निकाल दिया। उम्मीद थी कि हिरण पूरे बाड़े में दौड़ लगाएंगे। पर ऐसा नहीं हुआ। हिरण दौड़ते, पर बीच में लगी बाड़ की रेखा तक जाकर रुक जाते थे। हिरणों के दिमाग में यह बात समा चुकी थी कि वे इस सीमा से बाहर नहीं जा सकते। इससे अधिक सोचने की क्षमता उनमें नहीं थी।

शेर और बाघ जैसे शक्तिशाली जानवर भी चिड़ियाघरों में प्लाइवुड की बनी पतली दीवारों के सहारे अलग-अलग रखे जाते हैं। इन जानवरों के शक्तिशाली पंजों से ये दीवारें आसानी से टूट सकती हैं पर यह बात उनके दिमाग में आती ही नहीं। प्रारंभ में इन जानवरों को पक्की दीवारों वाले कमरों में रखकर कटधरे में रहने का आदी बना दिया जाता है।

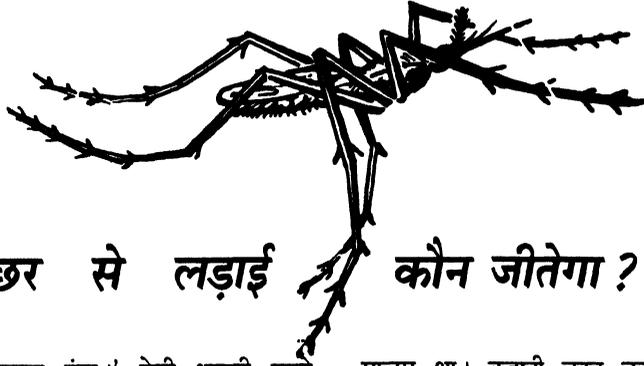
जब जानवर में कटधरे या किसी सीमित क्षेत्र में रहने की आदत डाल दी जाए तो वह अपनी इस आदत या अनुभव से बाहर नहीं निकलता है। कभी-कभी अनुकरण से यह आदत बदलती है, पर बहुत ही कम। एक बार भालूओं की देखभाल करने वाला व्यक्ति बाड़े की चाबी भूल आया। वह चाबी लेने नहीं गया और बाड़े की दीवार में बने छेदों के सहारे चढ़ कर अंदर पहुंच गया। उसने भालूओं को खाना खिलाया और फिर उसी तरह दीवार पर चढ़कर बाहर आ गया। भालूओं ने उसकी

देखा-देखी दीवार पर चढ़कर बाहर आना शुरु कर दिया। किसी तरह उन्हें अंदर ले जाया गया और दीवार के छेद बंद कर दिए गए। भालूओं के दिमाग में स्वतंत्र होने के लिए यह विचार नहीं आया कि वे एक दूसरे पर चढ़कर बाहर जा सकते हैं।

इन तीनों उदाहरणों से यही बात समझ में आती है कि जानवरों को जो सिखा दिया जाए वे उससे आगे स्वयं नहीं सीखते हैं। जानवरों में सीखने-समझने की क्षमताएं अलग-अलग हैं।

ऐसा माना जाता है कि लाखों वर्षों में मनुष्य भी धीरे-धीरे सीखते हुए आज की स्थिति में आया है। इसी तरह जानवरों में कई परिवर्तन हुए हैं। पर ये परिवर्तन अपने आपको जीवित रखने के हिसाब से हुए हैं और इसी हिसाब से दिमाग का विकास भी हुआ है। अभी तक की गई खोजों में मनुष्य जैसा दिमाग व क्षमता अन्य किसी प्राणी में नहीं पाई गई है। न ही ऐसा कोई प्राणी दिखता है जो निकट भविष्य में मनुष्य के समकक्ष बने। पर ऐसा न समझ लेना कि मनुष्य के पास प्राणियों में सबसे अच्छा दिमाग है तो वह अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ है या वह जो करता है वह उचित ही है •





मच्छर से लड़ाई कौन जीतेगा ?

‘मच्छर की तरह मसल दूंगा।’ ऐसी धमकी तुमने सुनी होगी। डरना नहीं। अगर सामने वाला तुम्हें मच्छर समझता है तो वह फिलहाल तुमसे नहीं जीत सकता।

जिस मच्छर को हम चुटकी में मसल देने की बात करते हैं उससे मनुष्य की बहुत पुरानी लड़ाई है। मनुष्य ने कई युद्ध और दो महायुद्ध लड़े और उनमें हारजीत का फैसला हो गया। पर मच्छर और मलेरिया से वह नहीं जीत पाया। हमेशा मच्छर ही मनुष्य पर भारी रहता है।

तुमने इतिहास में हुमायूँ के बारे में पढ़ा होगा। जब हुमायूँ अपने एक लाख कुशल सैनिकों की सेना लेकर शेरशाह सूरी से लड़ने पहुंचा तो हुमायूँ की सेना मलेरिया फैल जाने से पहले ही पस्त हो गई। 1802 ई. में फ्रांस के शासक नेपोलियन बोनापार्ट के साथ भी ऐसा ही हुआ। नेपोलियन हायती (वेस्ट इंडीज) और मिसीसिप्पी घाटी को जीतने का प्रयास कर रहा था, उस दौरान उसके 33,000 सैनिकों में से 29,000 सैनिक मच्छर द्वारा फैलाए जाने वाले पीतज्वर से मारे गए। ऐसे कई उदाहरण हैं। दूसरे विश्वयुद्ध (1939 से 1945 ई.) के समय मित्र राष्ट्रों (अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस आदि) और बाद में अमेरिका द्वारा वियतनाम पर आक्रमण के समय युद्ध में जितने सैनिक मारे गए उनसे कहीं अधिक सैनिक मच्छरों द्वारा फैलाई गई बीमारियों से मर गए।

वैज्ञानिकों ने 1876 से 1900 ईसवी के बीच मच्छरों द्वारा फैलाई जाने वाली बीमारियों और मच्छरों की जातियों को पहचाना।

मच्छरों द्वारा कौन-कौन सी बीमारियां फैलाई जाती हैं यह तुम भी पता करो। यहां हम मलेरिया की ही बात कर रहे हैं। मादा एनोफलीज मच्छर को पहचाने जाने के बहुत पहले से लोगों को मलेरिया का इलाज

मालूम था। कहानी बहुत बड़ी है पर कम शब्दों में बताएं तो अठारहवीं शताब्दी में यूरोप महाद्वीप के कुछ स्पेनवासी दक्षिण अमरीका के पेरू देश में पहुंचे। वहां के निवासी एक पेड़ की छाल से मलेरिया का सफल इलाज करते हैं, यह पता चला। इस पेड़ का नाम बाद में सिन्कोना रखा गया और इससे क्वीनीन नामक दवा प्राप्त की। क्वीनीन या कुनैन मलेरिया बुखार की सबसे सस्ती व सफल दवा है।

दूसरे महायुद्ध में ऐसे इलाके भी चपेट में आ गए जो मलेरिया से ग्रस्त थे। लड़ाई आदमी-आदमी के बीच और आदमी व मच्छर के बीच चलने लगी। मलेरिया से परेशान होने का अंदाज़ तुम इस बात से लगा सकते हो कि आस्ट्रेलिया के 800 सिपाहियों ने खेच्छा से मलेरिया के रोगाणु अपने शरीर में प्रवेश कराए, ताकि वैज्ञानिक मलेरिया के लिए बनी नई दवाओं का परीक्षण कर सकें। किसी नई दवा का सीधे आदमी पर ही परीक्षण होना अपने आप में एक बड़ी घटना है। मलेरिया की दवा के साथ-साथ वैज्ञानिकों ने डी.डी.टी. जैसी कीटनाशक दवा भी ढूंढी, जो मच्छर को खत्म कर सके। डी.डी.टी. व अन्य कीटनाशक दवाओं के छिड़काव से काफी हद तक मलेरिया की रोकथाम हुई।

भारत में भी मलेरिया से जन व धन दोनों ही रूपों में बहुत नुकसान हुआ है। आज्ञादी के बाद भारत सरकार ने विश्व स्वास्थ्य संगठन व अन्य अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के आर्थिक सहयोग तथा तकनीकी मार्गदर्शन में ‘मलेरिया नियंत्रण कार्यक्रम’ चलाया। देश भर में डी.डी.टी. का छिड़काव व मलेरिया की दवाइयों के वितरण का काम शुरु किया।

मच्छर के आमाशय में जब मलेरिया का रोगाणु अपना जीवनचक्र पूरा करता है उस अवधि को मच्छर की संक्रमण अवधि कहा जाता है। यदि इस अवधि

में ही मच्छर को मार दिया जाए तो मलेरिया के फैलने की काफी हद तक रोकथाम हो जाती है। मच्छर डी.डी.टी. के संपर्क में आने के दो-तीन दिन के अंदर मर जाता है। इसके लिए देश भर में बार-बार डी.डी.टी. का छिड़काव किया गया।

हमारे देश में मलेरिया नियंत्रण कार्यक्रम सन् 1953 में शुरू हुआ और 1965 तक सफलतापूर्वक चला। इस दौरान मलेरिया और मच्छर पर काफी हद तक नियंत्रण हो गया। पर 1970 आते-आते देश फिर से मलेरिया की चपेट में आ गया। सरकार ने पुनः मलेरिया नियंत्रण कार्यक्रम शुरू करके देश में डी.डी.टी. का छिड़काव प्रारंभ किया।

पर आज 17 साल बाद भी स्थिति शायद ज्यों की त्यों है। इस बात का अंदाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि केवल मध्यप्रदेश सरकार के 1986-87 के बजट में मलेरिया उन्मूलन के लिए 15 करोड़ रुपए का प्रावधान है। जबकि आगामी वित्त वर्ष में इसके लिए 21 करोड़ रुपए का प्रावधान किया जा रहा है। आखिर मलेरिया क्यों लौट आया?

सरकार के डी.डी.टी. छिड़कने के काम में कई खामियां थीं, ऐसा माना जाता है। 1969 में एक बैठक में जीव वैज्ञानिकों ने अनेक उदाहरण देकर सरकार को यह बताया कि डी.डी.टी. के छिड़काव से कैसे कुछ मच्छर बच जाएंगे। इन बचे हुए मच्छरों और उनकी

बाबूलाल को चढ़ा बुखार



बाबूलाल नवीं कक्षा का विद्यार्थी है। रोज की तरह एक दिन वह स्कूल पहुंचा तो थोड़ी ही देर बाद उसे तेज़ ठंड महसूस हुई और बुखार आ गया। बाबूलाल को गुरुजी ने घर भिजवा दिया।

अगले दिन उसे बुखार नहीं आया पर उसके पिताजी उसे अस्पताल ले गए। डॉक्टर ने बाबूलाल से एक-दो सवाल पूछे और फिर कुछ दवाइयां दे दीं। साथ में यह भी कहा कि कि खून की जांच करा लो। अस्पताल के एक आदमी ने उसकी उंगली में सुई चुभोकर खून की एक-दो बूंद एक कांच की पट्टी पर लें ली और कहा कि अगले दिन आकर रपट ले जाए। अगले दिन बाबूलाल को फिर बुखार आ गया, पर पहले दिन से कम। दो-तीन दिन बाद बाबूलाल ने अस्पताल से खून की जांच रपट लेकर डॉक्टर को दिखाई। डॉक्टर ने रपट देखकर कहा, 'मलेरिया है!' साथ ही कुछ दवाइयां और लिख दीं।

बुखार के बारे में खून की जांच से क्या पता लगा होगा। उसने मलेरिया के बारे में खोजबीन की। गुरुजी, पुस्तक तथा अस्पताल से उसे जो जानकारी मिली उसने उसे इस तरह लिख डाला।

बुखार कई बीमारियों में आता है और बुखार के कई प्रकार होते हैं। मलेरिया बुखार तेज़ ठंड लगकर आता है। अगले दिन बुखार नहीं आता है, पर तीसरे दिन फिर बुखार आ जाता है। मलेरिया बुखार एक खास जाति के मच्छर के काटने से आता है। वास्तव में मच्छर खुद यह बुखार पैदा नहीं करता है बल्कि वह इस रोग के रोगाणु को शरीर में पहुंचा देता है। बुखार के समय खून की जांच से दो बातें पता लगती हैं। एक तो यह कि कहीं मलेरिया तो नहीं है। यह बात खून में मलेरिया के रोगाणु पाए जाने पर पता चलती है। दूसरी यह कि किस तरह का मलेरिया है। इन बातों का ठीक-ठीक पता लगने पर ही उचित इलाज हो सकता है। कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है कि अलग-अलग दिन अलग-अलग मच्छर ने मरीज़ को काटा हो, तो रक्त में पहुंचने वाले रोगाणु भी अलग-अलग उम्र के होंगे। इससे मरीज़ को हर रोज बुखार आ सकता है। यह बात भी खून की जांच से ही पता चलती है। एक महत्वपूर्ण बात यह भी पता चली कि खून की जांच आमतौर पर तभी करनी चाहिए जब मरीज़ को कंपकंपी लग रही हो और बुखार हो। ऐसी स्थिति में खून में मलेरिया के रोगाणु मिलने की अधिक संभावना होती है, अन्यथा यह भी हो सकता है कि मलेरिया तो हो लेकिन खून की जांच में उसके रोगाणु न दिखें।

संतानों पर डी.डी.टी. का असर नहीं होगा। वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया कि डी.डी.टी. के साथ अन्य एक या दो कीट नाशक मिलाकर छिड़काव करने से बचने वाले मच्छर भी मर जाएंगे। पर सरकार ने इन बातों को अनसुना करके डी.डी.टी. का छिड़काव जारी रखा। विश्व स्वास्थ्य संगठन जैसी संस्था भी, जिसके पास ज्ञान व धन की कमी नहीं है, गलत तरीके से चल रहे इस कार्यक्रम को जारी रखने में मदद और प्रोत्साहन देती रही।

हमारी सरकार ने मलेरिया की रोकथाम के उपाय खोजने बंद कर दिए। जबकि अमरीका में 1964 तक कोई 2 लाख दवाओं का मलेरिया के संदर्भ में परीक्षण किया गया। इसमें सात ऐसी दवाएं मिलीं जो मलेरिया

बाबूलाल को गुरुजी से जानकारी मिली कि भारत में अभी तक 250 प्रकार के मच्छर पाए गए हैं। इनमें से अधिकांश जातियां मनुष्यों के संपर्क से दूर जंगलों में ही रहती हैं। कुछ गिनी-चुनी जातियां ही मनुष्य के संपर्क में आती हैं। मुख्यतः हमारे देश में एनोफलीज मच्छर की तीन जातियों की मादा मच्छर मलेरिया के रोगाणु फैलाती हैं।

बाबूलाल ने आगे और पूछताछ की तो पता चला कि जब मादा एनोफलीज मच्छर किसी मलेरिया पीड़ित व्यक्ति का खून चूसती है तो खून के साथ मलेरिया रोग के रोगाणु भी आ जाते हैं। यह रोगाणु मच्छर के आमाशय में पहुंचकर अपना जीवन चक्र पूरा करता है। मच्छर मनुष्य का खून चूसने के लिए अपने डंक का इस्तेमाल करता है। यह डंक इंजेक्शन की सुई की तरह काम करता है। काटते समय डंक से निकलने वाली लार के साथ मलेरिया के रोगाणु भी व्यक्ति के खून में पहुंच जाते हैं। ये रोगाणु परजीवी होते हैं। खून में पहुंचकर ये रोगाणु खून की लाल रक्तकणिकाओं में घुस जाते हैं। विभाजन होने पर इनकी संख्या में तेजी से वृद्धि होती है। जब ये लाल रक्त कणिकाओं को तोड़कर निकलते हैं तो कंपकपी के साथ तेज़ बुखार आता है। जब रक्त कणिकाएं अधिक संख्या में नष्ट होने लगती हैं तो शरीर में खून की कमी हो जाती है। खून की कमी और अधिक बुखार आने से अन्य कई बीमारियां भी हो सकती हैं। कई बार नष्ट हुई लाल रक्त कणिकाएं मस्तिष्क में जाने वाली शिराओं में जम जाती हैं। इससे मस्तिष्क तक खून नहीं पहुंचता और मरीज की मृत्यु हो जाती है।

के इलाज में सक्षम पाई गई। एक ओर तो डी.डी.टी. का गलत छिड़काव व दूसरी ओर इसके रोकथाम के उपाय खोजना बंद करना। आखिर सरकार ने ऐसा क्यों किया? कुछ लोगों का कहना है कि दवाएं बनाने वाली अंतर्राष्ट्रीय कंपनियों ने विश्व स्वास्थ्य संगठन पर दबाव डालकर अवैज्ञानिक मलेरिया नियंत्रण कार्यक्रम चलवाया। जिससे उनकी दवाओं की बिक्री पर असर न पड़े।

दूसरी तरफ कार्यक्रम को ठीक से पूरा भी नहीं किया गया। कार्यक्रम के पहले चरण में देश भर में डी.डी.टी. का छिड़काव हुआ। यह छिड़काव समयबद्ध तरीके से करना जरूरी था क्योंकि मच्छर अपना स्थान बदलते रहते हैं। इसके साथ यह भी जरूरी था कि मच्छरों के पैदा होने के स्थानों को भी साफ किया जाए। पर सरकार ने डी.डी.टी. के छिड़काव पर ही अधिक जोर दिया। यह भी कहा जाता है कि कई जगह डी.डी.टी. का छिड़काव भी निर्धारित मात्रा से कम हुआ। इन सब बातों का असर यह हुआ कि डी.डी.टी. से बच निकलने वाले मच्छरों की संख्या बढ़ती गई।

कार्यक्रम के दूसरे चरण में मलेरिया पीड़ित लोगों को ढूंढकर उनका इलाज किया गया। पर इसमें खून की जांच की रपट जल्दी उपलब्ध न होने के कारण, कहीं तो पूरा इलाज और कहीं अधूरा छूट गया।

कार्यक्रम में इस तरह की खामियों के अलावा कुछ और कारण सामने आए हैं। आज़ादी के बाद आवागमन के साधनों में वृद्धि, बड़ी-बड़ी योजनाओं के लिए श्रमिकों का एक स्थान पर एकत्र होना या दूसरे स्थान पर जाना ऐसी घटना है जिसमें अधूरे इलाज वाले या मलेरिया पीड़ित व्यक्ति ऐसे क्षेत्रों में भी पहुंच गए, जहां मलेरिया की काफी हद तक रोकथाम हो गई थी। उदाहरण के लिए गंगा और हिमालय के बीच वाले मैदानों में मलेरिया पर नियंत्रण के साथ-साथ ही वहां खेती बाड़ी की अच्छी शुरुआत हुई। पर कुछ समय बाद ही उस इलाके में बाहरी लोगों के साथ ही मलेरिया भी पहुंच गया।

पिछले कई सालों में बड़ी-बड़ी सिंचाई योजनाएं व कल कारखाने शुरू हुए हैं। बांधों में पानी इकट्ठा करके उनसे सिंचाई के लिए नहरें निकाली गईं। अधिकतर नहरों से पानी रिसकर आसपास जमा होता रहता है। इसी प्रकार खेतों में सिंचाई के बाद पानी के निकास की ठीक व्यवस्था न होने से भी यह पानी आसपास

गड़दों, नालों आदि में जमा होता रहता है। बड़े-बड़े शहरों में उपयोग किए गए पानी के निकासी की उचित व्यवस्था न होने से, जहां-तहां पानी इकट्ठा होता रहता है। जो पानी शहर के बाहर पहुंच भी जाता है वहां उसकी सफाई या उसके बहते रहने पर उचित ध्यान नहीं दिया जाता। यही हाल कल-कारखानों से निकलने वाले पानी का होता है। इसी पानी में मच्छर अपने अंडे देते हैं और अपना प्रकोप फैलाते हैं। यदि हम कहें कि पिछले 20-25 वर्षों में हमने अन्य चीजों की तुलना में मच्छर पैदा करने के कारखाने ज्यादा लगाए हैं तो यह अतिशयोक्ति नहीं है।

मच्छरों में कीटनाशकों को पचाने की शक्ति भी हमने ही बढ़ाई है। सिंचाई के साथ उन्नत खेती का प्रचार हुआ। नई संकर नस्लें लगाई जाने लगीं। संकर नस्ल की फसलों में दवाई, खाद आदि देना जरूरी है, नहीं तो पैदावार बिलकुल कम होने का खतरा रहता है। दवा बनाने वाली कंपनियों ने इनका प्रचार भी बढ़ा चढ़ाकर किया। किसानों ने भी इन दवाओं खासकर कीटनाशकों का गलत/सही दोनों प्रकार का इस्तेमाल किया। कोई डाक्टर किसी व्यक्ति को गलत या कम-ज्यादा दवा दे दे तो पता चलने पर वह आदमी डाक्टर से

लड़ने पहुंच जाएगा पर खेत में खड़ी फसल किससे लड़े? खेतों में छिड़की गई यह दवा बरसात या सिंचाई के पानी के साथ ही यहां-वहां एकत्र हो जाती है। ऐसे पानी में जन्म लेने वाले मच्छर के लार्वा इन दवाओं को पचाने की क्षमता प्राप्त कर लेते हैं, फलस्वरूप धीरे-धीरे डी.डी.टी. या ऐसे अन्य कीटनाशकों का उन पर कोई असर नहीं होता।

यह कैसी विडम्बना है कि एक तरफ हम करोड़ों रुपए खर्च करके मलेरिया को खत्म करने का कार्यक्रम चलाते हैं, दूसरी ओर इसे नए रूप में पनपने देने में मदद करते हैं। कहा जाता है कि हमारे यहां योजनाएं समग्रदृष्टि से नहीं बनती हैं जिसमें हम योजनाओं से एक ओर कुछ लाभ प्राप्त करते हैं तो दूसरी ओर उसे खो देते हैं।

यह भी ध्यान में रखना है कि मच्छर मिरफे मलेरिया ही नहीं कई अन्य बीमारियां भी फैलाता है। मलेरिया से छुटकारा पाने के लिए क्या करना होगा? इस सवाल पर दुनिया भर के देश और वैज्ञानिक खोज कर रहे हैं। मलेरिया का टीका बनाने की कोशिश भी की जा रही है पर अभी तक ड्रम में मफलता नहीं मिली है। ●

मच्छरों के दुश्मन



रोनाल्ड रॉस

सर रонаल्ड रॉस को 1902 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। रонаल्ड को यह सम्मान मलेरिया रोगाणु के वाहक मच्छर की खोज करने के लिए मिला।

उसकी सारी पढ़ाई-लिखाई लंदन में हुई। हालांकि पढ़ाई-लिखाई में रनाल्ड का मन नहीं लगता था। वह स्कूल के बगीचे में घूम-घूमकर सांप, छिपकली, मंडक आदि पकड़ा करता। इसी समय रनाल्ड ने जंतुओं के ऊपर एक पुस्तक भी लिखी। रनाल्ड के पिता उसे डाक्टर बनाना चाहते थे, पर रनाल्ड को डाक्टरी में बिलकुल रुचि नहीं थी। फलस्वरूप परीक्षा में फेल हो गया। रनाल्ड ने पानी के एक जहाज़ पर नौकरी कर ली। लेकिन फिर यकायक उसे डाक्टरी के प्रति रुचि पैदा हुई और उसने तैयारी करके परीक्षा पास कर ली। सन् 1881 में 24 वर्ष की आयु में फौज का डाक्टर बनकर रनाल्ड भारत लौटा।

उस समय भारत में बरसात के दिनों में मलेरिया बुखार बड़ी तेज़ी से फैलता था, जिसमें हज़ारों लोगों की मृत्यु हो जाती। यह देखकर डाक्टर रॉस ने मलेरिया पर खोज आरम्भ की लेकिन वह खुद ही मलेरिया से बीमार पड़ गया। कुछ समय बाद सन् 1890 में फिर अपना काम आगे शुरू किया। इसी दौरान रॉस को पता चला कि एक फ्रेंच डाक्टर चार्ल्स लावरन भी खोज कर रहे हैं। डाक्टर चार्ल्स का मत था कि छोटी-छोटी

जीवित-संरचनाएं जिन्हें परजीवी और वैज्ञानिक भाषा में प्लासमोडिया कहते हैं, मलेरिया ग्रस्त रोगी के रक्त में पाए जाते हैं और यह एक निश्चित समय पर एक नियमित चक्र के अनुसार वृद्धि करते हैं।

रॉस ने रोगियों के रक्त में प्लासमोडिया खोजने का प्रयास किया लेकिन असफल रहा। रॉस ने डाक्टर पेट्रिक मॉनसन से संपर्क किया जो कई वर्षों से फाइलेरिया पर कार्य कर रहे थे। डा. मॉनसन ने रॉस को प्लासमोडिया दिखलाए तो रॉस लावरन की खोज को सही मानने लगा। अब उसके सामने प्रश्न यह था कि यह प्लासमोडिया कहां से और कैसे आता है? और अन्य स्वस्थ व्यक्तियों को कैसे प्रभावित करता है? इन प्रश्नों के उत्तर पर ही मलेरिया का पूरा निदान आधारित था।

डाक्टर मॉनसन और डाक्टर लावरन का मत था कि मलेरिया मच्छर के द्वारा फैलता है। अब रॉस को सबसे पहले वह मच्छर खोज निकालना था जिसमें प्लासमोडिया पाए जाते हों। रॉस ने अनेक जातियों (स्पीशीज़) के मच्छरों को पकड़वा कर इकट्ठा किया और उनका विच्छेदन करके देखना शुरू किया। रॉस अपनी इस खोज में इतना व्यस्त रहा कि सुबह सात बजे से सायं सात बजे तक निरंतर मच्छरों को काट-काट कर देखा करता। इस अनवरत परिश्रम से उसकी आंखें भी सूज गई थीं। फिर भी उसे वह मच्छर न मिल सका, जिसकी उसे तलाश थी।

डाक्टर मॉनसन ने राय दी कि शायद मलेरिया उस पानी के पीने से फैलता हो जिसमें मच्छर प्लासमोडिया छोड़ जाता हो। अतः रॉस छह महीने तक पानी के ऊपर जांच-पड़ताल करता रहा। उसने स्वयं भी वह पानी पिया लेकिन न तो वह बीमार पड़ा और न ही पानी में प्लासमोडिया मिले।

इसी समय बंगलौर में भंयकर रुप से हैजा फैला। रॉस को बंगलौर जाना पड़ा। अगले साल तक रॉस मलेरिया पर कुछ काम न कर सका। बंगलौर से लौटने के बाद रॉस पुनः अपने काम में जुट गया। वह खुद भी मलेरिया का शिकार हो गया। बीमारी की दशा में भी रॉस प्लासमोडिया की खोज करता रहा।

रॉस ने अनुमान लगाया कि मच्छर के काटने से ही वह बीमार पड़ा है। उसे याद आया कि जंगल में छुट्टी मनाते समय जिस मच्छर ने काटा था उसके पर भूरे और सफेद थे। वह दीवार पर एक कोण बनाते

हुआ बैठा था। ऐसा मच्छर रॉस ने पहले कभी नहीं देखा था। ऐसा ही मच्छर एक दिन रॉस को अपने आफिस में दिखाई दिया। रॉस ने उसे पकड़ लिया। बाद में ऐसे सैकड़ों मच्छर पकड़ मंगाए और लगातार पांच दिन तक उनका विच्छेदन करता रहा। छठवें दिन रॉस को एक मच्छर में बारह सिस्ट दिखलाई दीं, जिनमें काले रंग के हल्के-हल्के निशान थे। कुछ समय के बाद जब उसने दूसरे मच्छर को काटकर देखा तो उसकी सिस्ट और बड़ी हो गई थी, काले निशान भी काफी साफ हो गए थे। रॉस ने अनुमान लगाया कि यह काले निशान ही वास्तव में प्लासमोडिया हैं जो कि मच्छर के पेट में बढ़ने के बाद उसके थूक में चले जाते हैं। जब ऐसा मच्छर स्वस्थ व्यक्ति को काटता है तो उसके खून में अपने प्लासमोडिया छोड़ देता है। रॉस के ये अनुमान परीक्षणों द्वारा बाद में सत्य पाए गए।

सन् 1899 में भारतीय मेडीकल सर्विस से निवृत्त होने के बाद रॉस ने पश्चिमी अफ्रीका की यात्रा की, जिसका उद्देश्य मलेरिया फैलाने वाले मच्छरों की अन्य जातियों की खोज करना था। पश्चिमी अफ्रीका की यात्रा के बाद रॉस लंदन पहुंचा, जहां वह पढ़ाने और डॉक्टरी करने लगा।

विख्यात पनामा नहर को बनाने में रॉस ने अप्रत्यक्ष रूप से बहुत बड़ी मदद की। नहर को बनाने का बहुत समय पूर्व प्रयास किया गया था लेकिन सफलता नहीं मिली। क्योंकि जो भी मज़दूर इस क्षेत्र में काम करने गया, मलेरिया, पीला बुखार आदि के कारण ज़िंदा नहीं लौटा। एक अमेरिकन जार्ज नामक डाक्टर ने जो कि रॉस की खोजों पर आगे काम कर रहा था, रॉस से पनामा क्षेत्र के बारे में विचार विमर्श किया। रॉस के सतत् प्रयत्नों से पनामा क्षेत्र अमेरिका का सबसे अधिक स्वास्थ्यप्रद जलवायु वाला प्रदेश बन पाया। पनामा नहर भी सफलता पूर्वक बन गई।

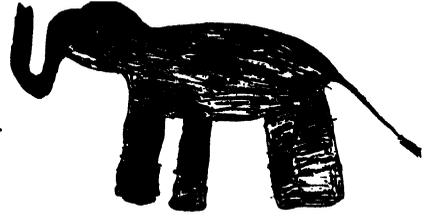
रॉस ने कई पुस्तकें लिखीं तथा पत्रिकाओं का संपादन भी किया। डा. रॉस को नोबेल पुरस्कार के अतिरिक्त कई अन्य पुरस्कारों तथा उपाधियों से विभूषित किया गया। इंग्लैंड में 'रॉस इन्स्टीट्यूट' की स्थापना की गई, जो आज भी कार्यरत है।

16, सितंबर, 1932 को रॉस की मृत्यु हो गई। लेकिन मलेरिया पर किए गए उनके काम के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा। ●



शेर को सवा शेर

चित्र : ओमप्रकाश पाटीदार, बालागढ़



चित्र : चंद्रकांता मालवीय, सातवीं, देवास

एक बबर शेर को एक बंदर मिल गया। शेर उस बंदर पर झपटा और बोला, “बोल जंगल का राजा कौन है?”

बंदर बोला, “आप ही हुजूर और कौन हो सकता है।” प्रसन्न होकर शेर ने उसे छोड़ दिया।

शेर को जो अगला जानवर मिला, वह एक गधा था। वह उस पर झपटा और बोला, “बता इस जंगल का राजा कौन है?”

निरीह पशु बोला, “आप हैं महाबली शेरजी।” तो शेर ने उसे भी छोड़ दिया।

तभी शेर को हाथी दिखाई दिया। उसने गरज कर फिर वही सवाल किया। अब क्या था, हाथी ने शेर को सूंड से पकड़ा। उसको एक चक्कर खिलाया और दूर फेंक दिया। शेर किसी तरह गिरता-पड़ता उठा और मुंह बनाकर बोला, “ठीक है, ठीक है! सवाल का जवाब नहीं आता था तो पहले ही कह देना था, इतना ताव खाने की क्या ज़रूरत थी?”

□ पंकज पायक, तीसरी, मंदसौर

चुंबक चोरी गया

यह कहानी मैं मेरी कक्षा के बारे में लिख रहा हूँ। हमको विज्ञान का पाठ पढ़ाया गया। फिर टीचर ने पूछा, ‘किसके घर चुंबक है?’ कई बच्चों ने बोला हमारे पास है। फिर मैंने बोला मेरे पास है।

दूसरे दिन मैं चुंबक ले जाना भूल गया। एक लड़का चुंबक लाया था, उसने टीचर को बताया। टीचर ने सब बच्चों को बताया कि यह लोहे की चीजों से चिपकता है। अब रिसेस हुई, सब खाना खाने लगे। एक लड़का कक्षा में घुसा और चुंबक चुरा कर खाना खाने के डिब्बे में डाल दिया। वह लड़का हमारी कक्षा का ही था। उसका नाम संजय था। फिर रिसेस खत्म हो गई। सब बच्चे कक्षा में चले गए।

कक्षा शुरू हुई तो जो चुंबक लाया था, उसने मैडम को बता दिया कि मेरा चुंबक बस्ते में नहीं है। तो मैडम ने थोड़े बच्चों का बस्ता देखा। एक लड़का राहुल पटेल मैडम के पास गया और कुछ बोला। इतने में संजय ने चुंबक डिब्बे

से निकाला और जेब में डाल लिया।

राहुल की बात सुनकर मैडम आने लगी। एक लड़के ने संजय से पूछा, ‘यह तुमने क्या डाला है?’ तो उसने बोला, ‘यह चम्मच थी। मैं आज पोहे लाया था और उसने फिर से उसे डिब्बे में डाल दिया। डिब्बा बंद करके बस्ते में डाल दिया। मैडम ने बोला, ‘तुम बस्ते में से किताबें निकालो।’ उसने किताबें निकाली। फिर मैडम बोली, ‘डिब्बा निकालो।’ उसने डिब्बा निकाला। मैडम ने कहा, ‘तुम इसे खोलो।’ उसने खोला तो मैडम ने देखा कि चुंबक डिब्बे में था।

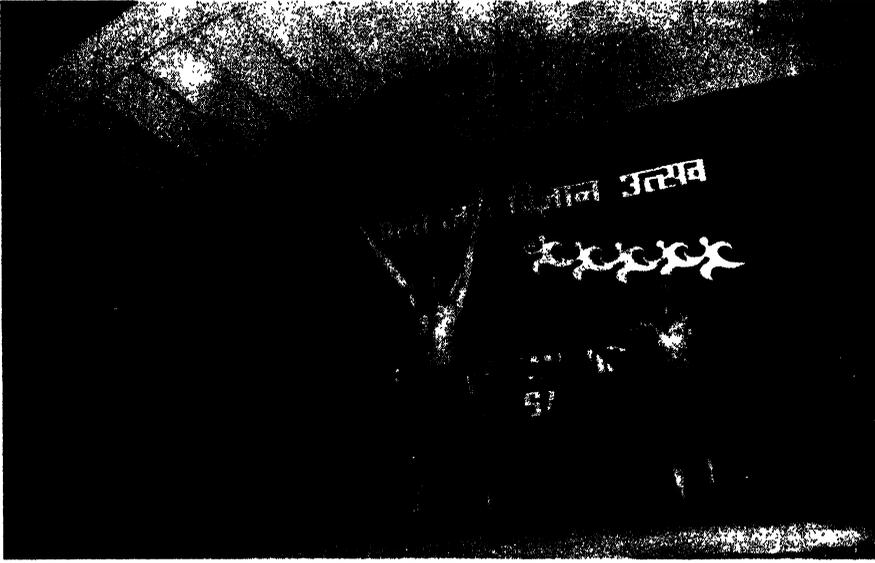
मैडम ने संजय से चुंबक ले लिया और सबसे कहा हम संजय को एक सजा दे रहे हैं, आज उससे कोई भी बात नहीं करेगा।

□ मनीष स्याग, सात वर्ष, देवास



भारत
जन
विज्ञान
जत्था

चित्र कथा



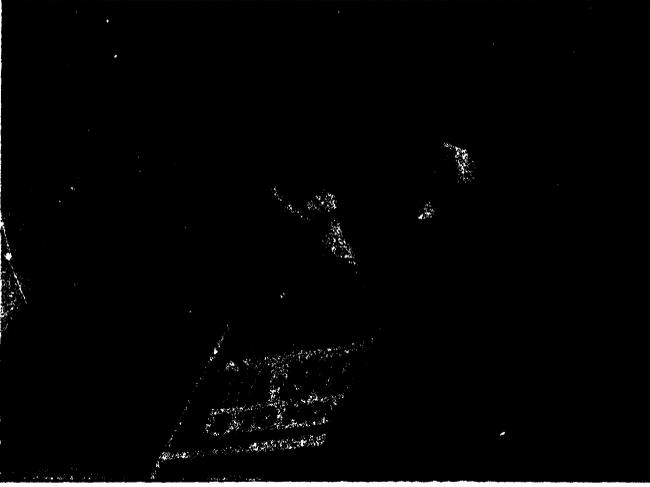
भारत जन विज्ञान जत्था के अंतर्गत क्या क्या हुआ यह जानने की उत्सुकता तुम में ज़रूर होगी। हमने सोचा कि लंबी-चौड़ी रपट के बदले क्यों न चित्रों से ही सारी कहानी सामने लाएं।

तेईस राज्यों से होते हुए पांच जत्थे 29 अक्टूबर से मध्यप्रदेश में दाखिल होना शुरू हुए। 7 नवंबर को पांचों जत्थे तथा देश के कोने-कोने से आए लगभग 3000 लोग भोपाल में एकत्रित हुए। 7 नवंबर की सुबह सबसे पहले यूनिजन कार्बाइड कारखाने के बाहर सबने एक सामूहिक शपथ ली (अगला पृष्ठ देखो)। फिर शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, पानी, प्रदूषण, आत्मनिर्भरता जैसे 7 विषयों पर परिचर्चा की गई। और फिर भोपाल की सड़कों पर एक जन विज्ञान जुलूस निकला, जिसमें 7000 से अधिक लोगों ने भाग लिया। शाम को 5000 से अधिक लोगों ने पांचों जत्थों द्वारा प्रदर्शित 'कला से विज्ञान' कार्यक्रम देखा।

भारत जन विज्ञान जत्था के इस सफल आयोजन के बाद यह बात उभरी कि देश के हर राज्य के हर कोने में विभिन्न लोग जन विज्ञान के इस काम को आगे बढ़ाने के लिए बेहद उत्सुक हैं। जगह-जगह स्थानीय जन विज्ञान ईकाइयां बन गई हैं। संभव है तुम्हारे यहां भी बनी हो। बहरहाल.. चलो अब चित्रों में देखें कहां.. क्या हुआ?

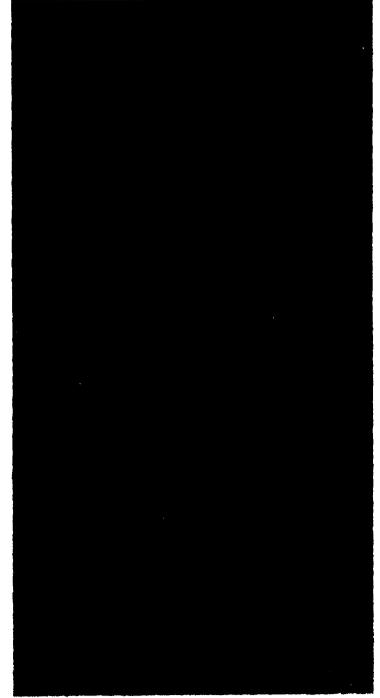
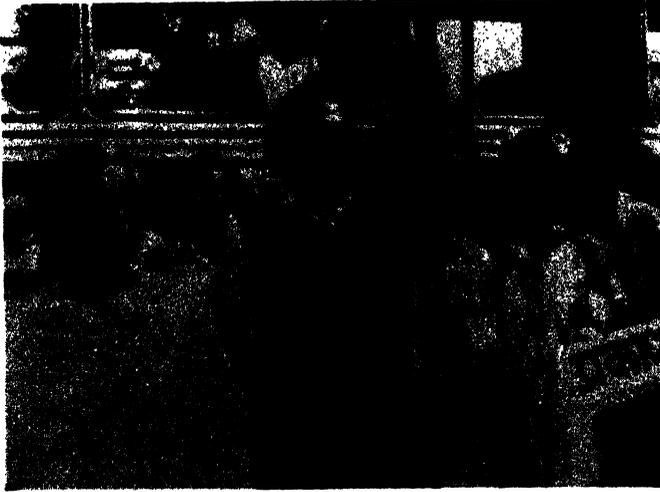
7 नवंबर के कार्यक्रम के
दो पहलू दो चित्रों में





शपथ

7 नवंबर, 1987



भोपाल गैस त्रासदा का याद में रथ वायुमन द्वारा
बनीई मुर्त यानयन कार्याडट क. याद



“भारत जन विज्ञान जत्ये में भाग लेने
वाले हम सभी सहभागी इन्सानी हालत
में सुधार के लिए विज्ञान और तकनीकी
क्षमता में गहरा विश्वास प्रकट करते हैं।

हम दुनिया की सबसे भयंकर औद्योगिक
दुर्घटना में हताहत हुए लोगों को भोपाल
में इस स्थान पर याद करते हैं। इसके
साथ ही विज्ञान के दुरुपयोग के शिकार
अन्य सभी लोगों के प्रति गहरी हमदर्दी
का इज़हार करते हैं।

हम प्रतिज्ञा करते हैं कि विज्ञान और
तकनीकी का इस्तेमाल मनुष्य की बेहतरी
के लिए करेंगे।”

हिरोशिमा नहीं, भोपाल नहीं!



उड़ीसा में जत्थे का
एक कार्यक्रम
छाया · विश्व प्रिया





छाया : विश्व प्रिया

लेह (लद्दाख) में प्रदर्शनी देखते हुए दर्शक (ऊपर) और विज्ञान प्रयोगों में मग्न (नीचे) ।





स्वीन्द्र भवन, भोपाल में 7 नवंबर की शाम 'कला द्वारा विज्ञान' का एक दृश्य (ऊपर) और कार्यक्रम देखते हजारों दर्शक (नीचे)।





'पृथ्वी' नाटक का एक दृश्य (ऊपर) । 7 नवंबर की शाम अंत में सभी राज्यों के प्रतिनिधि मंच पर सामूहिक गीत गाते हुए (नीचे) ।



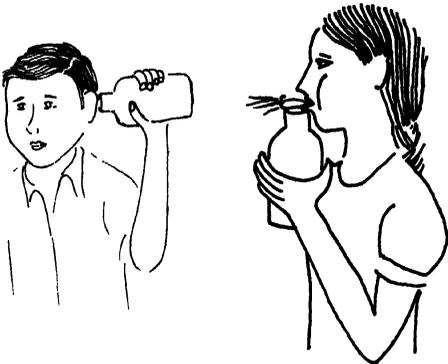
ऐसा क्यों?

कमल ने मोमबत्ती के एक टुकड़े को पानी में भरे गिलास में डाला। टुकड़ा पानी में आड़ा (क्षैतिज) तैरने लगा। उसने दो आर्लापिन लीं और उन्हें टुकड़े के निचले हिस्से में फंसा दिया। अब मोमबत्ती का टुकड़ा पानी में खड़ा तैरने लगा। केवल उसका ऊपरी हिस्सा ही पानी में बाहर था। अब कमल ने मोमबत्ती को जला दिया। कमल ने देखा कि मोमबत्ती लगभग खत्म होने तक जलती रही, बुझी नहीं। कमल इस उलझन में है कि ऐसा क्यों हुआ? मोमबत्ती पानी में डूबकर बुझ क्यों नहीं गई? उलझन सुलझाओ तो!



2.

दो ग्लोस बोतलें लो। एक बोतल अपने साथी को पकड़ाओ और कहो कि वह उसे अपने कान के पास रखे। अब तुम अपने साथी से कुछ दूरी पर बैठकर दूसरी खाली बोतल के मुँह पर फूँक मारकर उसे बजाओ। तुम्हारे साथी को उसकी बोतल से आवाज़ आती सुनाई देगी। बताओ भला ऐसा क्यों?



उदासीनीकरण

साबुन और नींबू के रस से

किसी भी क्षारीय घोल में अम्लीय घोल मिलाने पर क्या होता है, यह तुम अपनी प्रयोगशाला यानी घर में प्रयोग करके देख सकते हो। इस प्रक्रिया को उदासीनीकरण कहा जाता है।

नहाने और कपड़े धोने के साबुन का एक-एक टुकड़ा लो। इनका पानी में अलग-अलग घोल बनाओ। पानी की मात्रा दोनों में बराबर होनी चाहिए।

अब दो प्लेट लो। एक में नहाने और दूसरी में कपड़े धोने के साबुन के घोल की बराबर मात्रा लो। दोनों में चुटकी भर पिप्पी हल्दी मिलाओ। घोल तुरंत लाल रंग के हो जाएंगे।

अब ड्रापर से नहाने के साबुन के घोल में बूंद-बूंद करके नींबू का रस डालो। घोल को हिलाते जाओ और बूंदों की गिनती भी रखो। एक स्थिति आएगी जब घोल का रंग लाल से पीला हो जाएगा। यानी घोल अब अम्लीय बन गया। घोल को अम्लीय बनाने के लिए नींबू के रस की कितनी बूंदें लगीं, ध्यान रखना।

अब यही प्रक्रिया दूसरे घोल (धोने के साबुन) के साथ दोहराओ। तुम देखोगे कि इस घोल का अम्लीय बनाने के लिए अधिक बूंदों की जरूरत पड़ेगी। इससे यह निष्कर्ष निकला कि यह घोल नहाने के साबुन के घोल से अधिक क्षारीय है।

अब यही प्रयोग कपड़े धोने के सोडे के साथ करो। फिर इसे अलग-अलग किस्म के नहाने के साबुन के साथ दोहराओ।

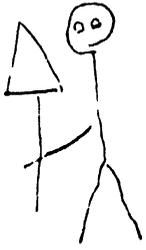
क्या तुम बता सकते हो कि नहाने के साबुन कम क्षारीय क्यों बनाए जाते हैं - खास कर शिशुओं के नहाने के साबुन!



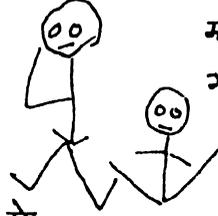
ईंट बनी है माटी से
जिस माटी के हैं हम



इशान के चित्र,
दुनू की कविता



उसकी भूख मिटाने को
बन जाते हम गुलाम



मालिक खा गये माटी को
भूख उसे हर दम

दौड़े दौड़े भागे आये
किया शहर को सत्नाम



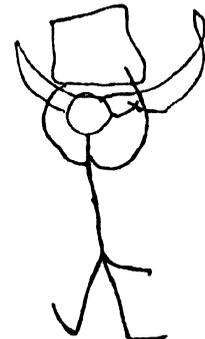
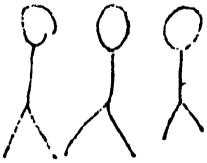
ऊँच नीच की टक्कर में
पिट गये हम पत्थर से ।



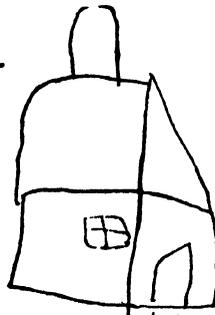
खेत गाँव छोड़ा हमने
नगर में काम है पाया



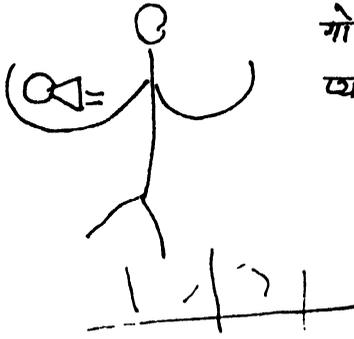
हम माटी के इंसानों में
ईंट पर ईंट है बैठाया



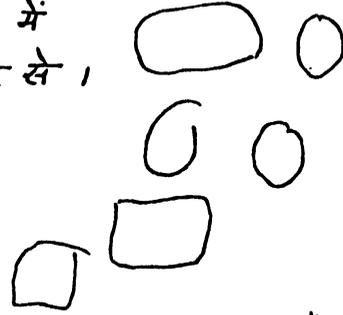
ये मेरे मज़दूर भाई
बहने और नन्हीं जानें



उजड़े घरों से आये है
मीनार महल बनाने



गोद जहाँ है गदर में
प्यार हमारा पत्थर से ।



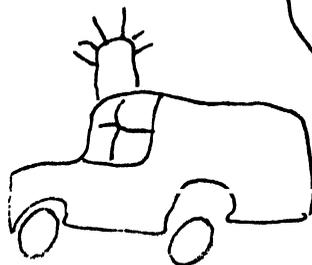
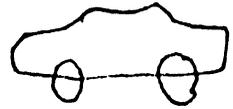
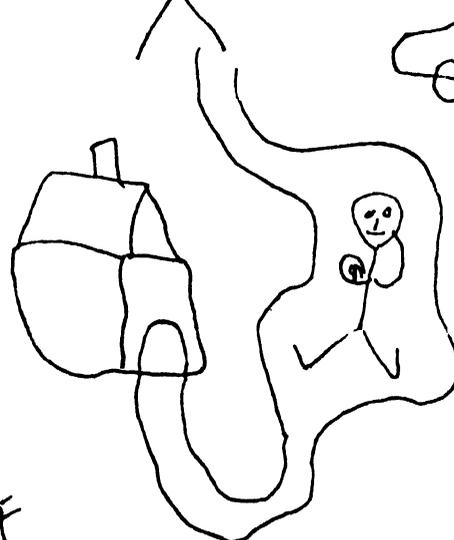
काम धाम या आराम
क्या हमारे हाथ में ?



अपने बाहों के ही बल से
दुःख से साहस कब सजेगी ?



खून पसीने के गारे से
अपनी बस्ती कब बनेगी ?



हर सवाल के उत्तर में
ईंट का जवाब है पत्थर से ॥



चकमक



मानव

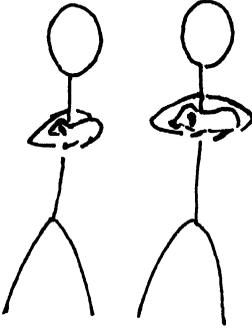
की

कहानी



कुत्ता बना दोस्त

सुनो, मूमा-मूमी ने एक कुत्ता पाल लिया। पहले कुत्ते उसी तरह जंगल में रहते थे जैसे लोमड़ी और काना गीदड़। आदमी उन्हें देखकर भाग जाते। भेड़िये भी तो कुत्ते के ही भाई-बंद हैं, वह काटकर खा जाते। बच्चों की तो वे घात में रहते ही थे। उस समय आदमी अपने खाने के लिए कुत्तों का भी शिकार करता था। मूमा-मूमी छोटे-छोटे बालक थे। पर वे भी शिकार पर गए थे। उस दिन कई कुत्ते-कुतियां मारी गईं। एक छिपी जगह में सात-आठ कुत्ते के बच्चे एक के ऊपर एक रंगते कांय-कांय कर रहे थे। मूमा की अम्मा की नज़र उनपर पड़ गई। सभी दौड़े उधर। अभी तक तो आदमी ने बच्चे-कुत्ते या बड़े कुत्तों को मारकर ही खाया था। मूमा-मूमी वहां गए तो कुत्ते के बच्चे उन्हें बहुत प्यार लगे। मूमा ने दो उठाए और मूमी ने दो। दूंसरे बच्चे भी दौड़ आए। सबने बच्चे उठाए। पर



बच्चे तो दो ही तीन कुतिया के थे। उनकी आंखें भी नहीं खुली थीं। वे तो दूध-भर ही पीते थे। सभी लड़कों ने ज़िद करके बच्चों को मारकर खाने नहीं दिया। वे उन्हें गोश्त देते, पर वह खाते नहीं थे। एक-दो दिन में सब मरे से हो गए। मूमा-मूमी की अम्मा बहुत होशियार थी। उसने शहद में पानी मिलाकर उन्हें चटा दिया। उस समय तो आदमी के पास कोई जानवर ही नहीं था कि उसका दूध देते। अम्मा चारों बच्चों को तो नहीं बचा सकी, पर दो जी गए। पिल्ले का नाम रखा था- चिल्ला और पिल्ली का नाम रखा था- चिल्ली। दोनों की आंखें खुल गईं। फिर चिल्ला-चिल्ली गोश्त भी खाने लगे। मोटे हो गए।

थे छोटी जात के, नहीं तो वे काटते भी आदमी को। मूमा-मूमी उन्हें गोद में लिए घूमते रहते। अपने साथियों को भी खेलने देते। दोनों छः महीने में बड़े हो गए। दोनों लाल रंग के थे। मूमा-मूमी उनको गोद में ही सुलाते थे। जाड़ों में कुत्तों के पास रहने से सरदी कम हो जाती है न।

ये पहले कुत्ते थे न, इनमें उतनी अकल नहीं थी। तो भी बुलाने पर दौड़ते उन्होंने तो कुत्ते देखे ही नहीं, या देखे तो मरे हुए जो भूने जाते थे। उनको पता भी नहीं लगा, ये हमारे ही हैं। एक दिन दोनों बच्चों के साथ जा रहे थे। उन्होंने खरगोश को पास से दौड़ते देखा। चिल्ला-चिल्लाकर दोनों दौड़े। वे क्या हाथ आते? पर उधर से कुछ आदमी आ गए। खरगोश मुड़ा, और चिल्ला-चिल्ली के मुंह में आ गया। दोनों ने झकझोर के उसे मार दिया और गोश्त खाने लगे। मूमा-मूमी के मुंह में पानी आ रहा था। पर पास जाने पर चिल्ला-चिल्ली गुरति। सारा गोश्त उनसे खाया नहीं गया। बाकी को मूमा-मूमी ने भूनकर खा लिया। सारे लोगों में हल्ला हो गया- 'कुत्तों ने शिकार किया।' सब सोचने लगे- 'जो ऐसे दस-बीस कुत्ते होते, तो कितना अच्छा होता!'

बस, तब से कुत्ता आदमी का दोस्त बन गया।



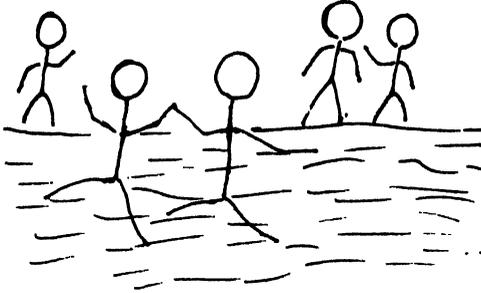
मुन्नी ने पकड़ी मछली

बहुत हजार बरस हो गए। कनैला के जंगल में वे ही लेप्चा जाति (किरात) के लोग रहते थे। वे झोंपड़ी में रहते थे। पचास-साठ मरद-औरत, बूढ़े-बच्चे थे। उनकी एक ही झोंपड़ी थी, बहुत भारी, घास-फूस की बनी। एक कोने में आग थी। लोग जंगल से शिकार मार लाते, कभी पानी के तालाब में से मछली मार लाते। देखा, एक दिन चुन्नू-मुन्नी भी अपने दोस्तों, मौसी के बच्चों के साथ तालाब में घुस गए — हम भी मछली मारेंगे। उन्हें अम्मा ने और मौसियों ने भी पानी

चकमक



में जाने से मना किया। सब लोगों के जंगल में घुस जाने पर बच्चों की सेना तालाब पर — और फिर



देखा-देखी पानी में। किनारे पर ही रहकर वह हाथ से मछली टोहने लगे (ऐसे तो मछली कहां हाथ आती!)। मूमा के हाथ में एक केकड़ा आ गया। उसे पानी से ऊपर निकाला और उसके बहुत-से बड़े-बड़े पैरों को देखा, तो पानी में फेंक दिया और डर के मारे कांपने लगा। एक बड़े पर होशियार लड़के ने समझाया — यह तो खाने की मछली थी। और किसी ने नहीं पकड़ी, पर मूमा ने इत्ता बड़ा केकड़ा पकड़ा। अम्मा और मौसी देखकर किती खुश होतीं! अब मूमा को अफसोस होने लगा। पर, पानी में फेंका केकड़ा कहीं हाथ आता! लड़के मछली पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। इसी समय मौसी की एक लड़की ज़ोर से चिल्ला उठी 'मर गई!' और पानी से बाहर उंगली पकड़कर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। उसने दाहिने हाथ का अंगूठा पकड़ रखा था। मूमा ने ज़रा-सा हटाकर देखा, तो उसमें से खून बह रहा था। सभी बच्चे घबरा गए। मौसी की बेटी को बहुत पीड़ा थी। उसकी दोनों आंखों से आंसू की धार बह रही थी। वह दर्द के मारे ज़मीन पर लोटकर रो रही थी। दूसरे बच्चे उसे उठाकर दादी के पास झोंपड़ी में ले गए। दादी ने कहा, 'हाथ में मछली आई थी?' 'हां आई थी। मैंने ज़ोर से पकड़ा। वह छटपटाने लगी। तभी मेरे अंगूठे में कांटा-सा लगा। बहुत दर्द है। हाय अम्मा, मरी!'

दादी अम्मा ने कहा, 'मुन्नी, मत रो, वह सिंही मछली थी। उसका कांटा बहुत तेज होता है और काटने पर बहुत दर्द होता है।' एक दिन मछली मरी, तो उसमें सिंही भी आई। अम्मा ने कहा, 'यह है लाल-लाल सिंही।' अभी भी वह ज़िंदा थी, कुलबुला रही थी।

अम्मा ने छोटी मुन्नी से कहा, 'लेगी मुन्नी?' कहते ही उसे हाथ से उठा लिया।

उस समय आदमी न नमक को जानते थे न खाते थे। नमक लगा देने से सिंही मरने लगती है और कांटा मारना भूल जाती है। अम्मा ने भूँकर दिया तो सबको सिंही बहुत मीठी लगी। सिर के बीच में ज़ोर से पकड़ लें तो सिंही कांटा नहीं चलाती।

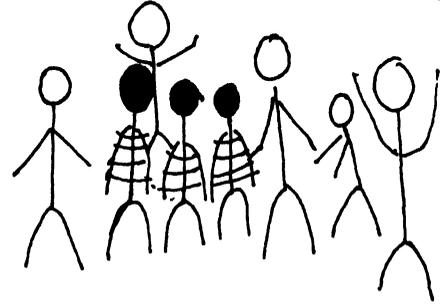
काले-पीले लोग

एक दिन बच्चे अम्मा और मौसियों के साथ नदी के किनारे चले गए थे। बच्चे वहीं शिकार का खेल, खेल रहे थे। तीर-धनुष भी उनके पास था। तीर पर हड्डी या कड़े पत्थर का टुकड़ा बांधते थे। अभी तो आदमी को न लोहे का पता था न तांबे का। बच्चे तो खेल कर रहे थे। बस उन्होंने तीर पर गोंद लगा दिया था और उस पर कांटा खोंस रखा था। एक दिन मूमा ने एक चिड़िया पर तीर फेंका। लग गया। छोटी चिड़िया को वह कांटा भी बहुत लगा। बेचारी फड़फड़ाने लगी। बच्चों ने उसे पकड़ लिया। बहुत छोटी थी, क्या करते?

एक दिन मूमा-मूमी और घर के सभी बच्चों को बहुत आश्चर्य हुआ। उस दिन भी वह नदी के किनारे खेल रहे थे। नदी के पार देखा, बहुत-से लोग हल्ला करते आ रहे हैं। पहले तो मालूम नहीं हुआ कि क्या बात है। नज़दीक आए तो देखा, अपने गांव के भी लोग हैं और दूसरे गांव के भी। उस समय गांव कहां थे? बस वह बड़ी सारी झोंपड़ी ही गांव थी। दूसरे गांव के लोग भी किरात-लेप्चा ही थे। वह एक-दूसरे की बोली समझ लेते थे। उनमें आपस में बहुत कम ही झगड़ा होता था।

पर, देखा, उन्होंने तीन दूसरी तरह के आदमी भी पकड़ रखे थे, जिनमें एक औरत भी थी। पर वह बहुत काले थे, ठीक कोयले जैसे। उनको देख मूमा-मूमी की सारी पलटन डर गई। वह तो साफ और कुछ पीले रंग के थे। उनसे बात पूछते तो, वे क्या कह रहे हैं, किसीकी समझ में नहीं आता था। वह दूसरी ही बोली बोल रहे थे। उनको बहुत पीटा था। बहुत रो रहे थे। बच्चे भी पास में जाकर देखने लगे। मूमा ने औरत की देह पर हाथ रगड़ा कैसा बेवकूफ लड़का था! वह समझता था, काला रंग देह में लगा रखा

है। वह भी तो जब भूत का खेल खेलते तब काला रंग देह में लगा लेते थे।



आज बच्चों को मालूम हुआ कि काले भी लोग होते हैं और उनकी बोली दूसरी भी होती है। वे दूसरे दिन इसी बात की चर्चा कर रहे थे, तो एक बड़े लड़के ने कहा — 'तीनों को मार के देवता की पूजा कर डालो, फिर उनके भुने मांस को भी खा डालो।' हां, उस समय लोग ऐसे ही जंगली थे। उन्हें अच्छी बात का पता ही नहीं था। वे बस इतना ही जानते थे कि अपने घरवालों को प्यार करना चाहिए। उनको खाना-पीना सब देना चाहिए। अपने ही पेट को भरना बुरा है। वे लोग दिन में डरते नहीं थे। पर रात होते ही सब जगह भूतों को देखने लगते। बड़े भी अकेले बाहर नहीं निकलते थे। कैसे लोग थे!

नहीं था लोगों ने बहुतेरा चाहा — देवता को चढ़ा दें, पर बच्चों ने ऐसा नहीं करने दिया। वे नरम-नरम घास उसके मुंह में दे देते। पहले तो नहीं खाया। दूध न मिलने से वह मरने वाला था। वहीं मौसी का एक छोटा-सा बच्चा था। इसलिए मौसी ने हिरन के बच्चे को भी दो-चार दिन अपना दूध पिलाया। फिर तो वह घास खाने लगा। उसी समय कुतिया के भी बच्चे पैदा हो गए। अच्छी कुतिया थी। उसने भी अपने बच्चों को दूध पिलाया। हां, अब आदमी के पास कुत्ते रहने लगे थे। वह शिकार में मदद करते थे। रात को रखवाली करते थे। अपनों को नहीं काटते थे। दूसरों को देखते ही भौंकने लगते थे। हिरन को वह भी पहचान गए थे, इसलिए उसे तकलीफ नहीं देते थे।

नए दोस्त



नये चुन्नू और मुन्नी को एक दिन छोटा-सा हिरन का बच्चा मिल गया। वह अभी दो ही चार घंटे पहले पैदा हुआ था। शिकारी आ गए। हिरनी अम्मा तो भाग गई, पर बच्चा नहीं भाग सका। चुन्नू और मुन्नू वहां पहुंच गए। प्यारा बच्चा लगा। उन्होंने पकड़ लिया घर ले आए। चमड़े की रस्सी से उसे बांध दिया। अभी तो वह दूध पीनेवाला था, मांस को खाने वाला ही

छोटे हिरन के बच्चे को लेकर आदमी के बच्चे खूब खेलते थे। कुत्ते के पिल्ले भी दौड़कर खेल दिखाते थे। हड्डियां बहुत मिल जाती थीं। कुछ चमड़ा-झिल्ली भी देते थे। सब लड़के नरम-नरम हरी घास काटकर लाते थे। किससे? पत्थर के चाकू से। हाथ से भी नोच लाते थे। धीरे-धीरे हिरन बड़ गया। वह हिरनी थी, हिरन होती तो उसके सींग होते और चुन्नी-मुन्नी के परेशान करने पर सींग चला देती। मुन्नी उसका सिर सहलाती। चुन्नू उसके मुंह के पास हाथ कर देता। हिरनी चाटने लगती। चुन्नू उसका मुंह चूमता और मुन्नी भी। कुत्तों और पिल्लों को तो अपने खाने में से देना पड़ता। हिरनी तो सिर्फ घास खाती थी।





हिरनी भी जानती थी कि अकेले जंगल में जाना ठीक नहीं है। मुन्नी बहुत समझाती थी — हिरनी रानी, जंगल में शेर भी रहता है, बाघ भी, भेड़िया भी। तुम्हें अकेले में पा वह चट कर जाएंगे। हिरनी बस बच्चों के साथ घूम लेती, दौड़ भी लेती। उसके साथ कोई नहीं दौड़ सकता था। एक दिन चुनू ने जिद की। हिरनी दौड़ी तो उसके सामने चुनू की चाल कछुए-सी थी। हिरनी बहुत दूर निकल गई। सब बच्चे हंसने लगे, ताली बजाने लगे। हिरनी ने चुनू को हरा दिया। एक दिन कुत्ता भी दौड़ा, पर वह भी हिरनी से दूर रह गया, किता तेज़ दौड़ती थी हिरनी!

बरसात में नदी का पानी बढ़ गया। हिरनी परले पार छूट गई। रात आने लगी। सब लोग डरने लगे — रात को उसे ज़रूर भेड़िया खा जाएगा। सब बच्चे जोर-जोर से पुकार रहे थे — हिरनी आ जा, हिरनी आ जा। रात आ रही है। हिरनी सोचती रही, सोचती रही, फिर छलांग मारकर पानी में कूद पड़ी। बाद में ऊपर तैर आई।

खेल खेल में



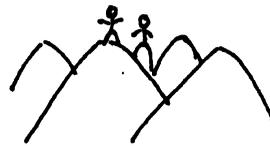
हां तो, काले-पीले दो तरह के आदमी थे। आपस में उनके झगड़े होते ही रहते। उनसे क्या लेना? वह तो जंगली लोग थे। आजकल तो बहन-भाई भी आपस में झगड़ पड़ते हैं। पर पापा जानते हैं कि दोनों बच्चे जल्दी ही झगड़ना छोड़ देंगे, नहीं तो लोग उनको जंगली कहने लगेंगे। एक बार चुनू और मुन्नी ने गज़ब की बात कर डाली। उस वक्त जौ, गेहूँ, चावल या आम-जामुन सब जंगल में होते थे जैसे और घास-फूस। और सब एक देश में होते भी न थे। एक दिन चुनू ने देखा, पकी जौ की बाल थी। उसके अनाज-दाने को वहां पड़ा देखकर उठा लिया और चुपके से मुन्नी के कान में कहा, 'एक खेल खेलेंगे। बस दाने को ज़मीन में डाल देंगे।' उन्होंने वैसा ही किया। जौ जम गए। फिर पानी बिना मुरझाने लगे। सूख गए होते, पर पानी बरस गया। जौ बढ़े-बड़े हो गए। बस अपनी हिरनी को छोड़ दिया, वह चरने लगी। अब घास लाने



के काम से छुट्टी मिल गई। चुनू ने बहादुरी दिखलाई। फिर तो सारे ही लड़के जौ लगाते और हिरनी को चराते। अभी आदमी ने अनाज खाना नहीं सीखा था।

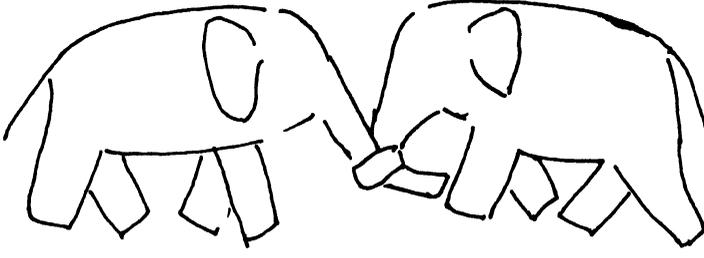
जंगल में घास और पानी कम होता तो जानवर दूसरे जंगल, में चले जाते। आदमी अपनी झोंपड़ी छोड़ उनके पीछे दूसरी जगह जाते। जानवर का खाना था घास और आदमी का था जानवर। आदमी जब जंगल में दाना डालने लगे, तो उनसे उगी हरियाली को देखकर कुछ दिन और ठहर जाते। दस-पांच दिन और झोंपड़ी छोड़ना नहीं होता। पुरानी झोंपड़ियां छोड़ते चुनू-मुन्नी और उनके साथियों को बहुत दुख होता। कभी कह भी देते, 'हम तो यहीं रहेंगे, हमें यह जगह पसंद आती है।' पर जब जानवर वहां से चले गए और तालाब भी सूख गए तो वहां रहकर वह खाते-पीते कैसे! रो-गाकर बच्चे भी चले जाते।

एक बार ये लोग एक पहाड़ वाले जंगल में रह रहे थे। वहां क्या देखते हैं, एक बहुत बड़ा अजगर है। जान पड़ता था, एक बड़ा-सा पेड़ ही है। काले मुंह वाले बानर आ गए। एक बानर बहुत नटखट था। संभल के न रहता तो अजगर उसे पकड़कर निगल ही गया होता। बंदर बहुत फुर्तीला होता है, और अजगर बहुत सुस्त। जब तक वह बानर को पकड़ने के लिए मुंह उधर फिराए, तब तक वह कूदकर दूसरी ओर चला जाता। एक बार वह कूदकर अजगर की पीठ पर बैठ गया। अजगर दौड़ा, और देह भी हिलाई, पर बंदर वैसे ही बैठा हंसता रहा। दूसरे बानरों की हिम्मत नहीं हुई। पर दूसरे ताली पीटते तमाशा देखते। लोग उस बानर को बहादुर कहने लगे।



नए संबंध

चुनू-मुन्नी पहाड़ में रहते थे। एक गुफा में। वहां



से दूर-दूर तक दिखता था। एक दिन देखा, एक शेर चला जा रहा था, उसके आगे-आगे बंदर जा रहा था। दादी ने बतलाया था कि शेर फल नहीं खाता, और बंदर गोश्त नहीं खाता। पर शेर बंदर का मांस तो खा सकता था। फिर बंदर ने न जाने कैसा इशारा किया, शेर ठहर गया। बंदर अकेले जाकर एक पेड़ पर चढ़ गया। वहां पास में नीचे छोटी-सी नदी बह रही थी। वहां तीन-चार जंगली गायें चर रही थीं। गायें उस समय सारी जंगली थीं। बंदर ने जोर से कहा, 'पू!' शेर एक छलांग में पेड़ के नीचे आया। और दूसरी छलांग में एक गाय के ऊपर उसके दांत और दोनों पंजे। गाय 'बां' करके गिर पड़ी, दूसरी गायें भाग गईं। शेर ने खून भी पिया और काट-काटकर मांस भी खा लिया। चुन्नू और मुन्नी कहने लगे, 'बंदर ने गाय क्यों मरवाई? काना गीदड़ मरवाता, तो बात भी थी, शेर का जूठन उसे मिल जाता।' मुन्नी ने कहा, 'बंदर समझता है कि शेर मेरा दोस्त है, मैं भी बड़ा आदमी हूं। शेखी मारना उसे अच्छा लगता है। वह नहीं समझता था कि जिस दिन शेर को शिकार के बिना भूखा रहना पड़ेगा, उस दिन उसे वह नहीं छोड़ेगा।' उस दिन से मुन्नी बंदरों को देखते ही गाली देती, उन पर पत्थर भी फेंकती। कोई-कोई कहते हैं, ऐसा नहीं। यह किसी ने कहानी गढ़ ली है। किसी दादी ने ही गढ़ी होगी। बच्चे उन्हें परेशान करते हैं — कहानी कहो, कहानी कहो। बेचारी रोज़ कहां से तीन-तीन, चार-चार कहानियां लाएं!

बहुत दिन हो गए, एक दिन चुन्नू-मुन्नी को जंगल में घूमते हुए नीचे उतरने पर एक छोटा-सा बानर का बच्चा पड़ा मिला। हाथियों के झुंड में एक बहुत बड़ा पहाड़-सा हाथी मालिक था। दूसरा हाथी जब बड़ा हुआ तो मालिक ने मार भगाया। अब वह भी तगड़ा हो गया था। आया लड़ने को। दोनों खूब संड़ से संड़

मिलाकर लड़े, दांत से दांत रगड़े। एक का आधा दांत भी टूट गया। दोनों लहलुहान हो गए। अंत में मालिक हाथी जान लेकर भागा। जब दोनों पहाड़-से हाथी चिंघाड़कर लड़ रहे थे, उसी समय एक बंदरिया की गोद से बच्चा गिर पड़ा। अम्मा बंदरिया की हिम्मत न हुई कि नीचे उतरकर बच्चे को ले जाए। सभी बंदरों के साथ वह भी उस जंगल से भागी। हाथी भी लड़कर चले गए। बच्चा पों-पों करते थक गया था। मुन्नी ने मारने के लिए पत्थर उठा लिया। फिर उसे अकेला देखकर दया आ गई। पास गई तो बच्चा कांपने लगा। उसने उठा लिया। अंगूठा मुंह में दिया तो वह चूसने लगा। जानता होगा दूध पी रहा है। भूखा था बेचारा। फिर फल को निचोड़ कर दिया। बच्चा तो सचमुच खेलने-खिलाने में उस्ताद निकला। वह कभी चुन्नू-मुन्नी की गर्दन पर चढ़ जाता, कभी पीठ पर। पके फल देखता तो दौड़कर पेड़ पर चढ़ जाता, और डालियों को हिला देता। बहुत-से फल भद-भद नीचे गिर पड़ते। चुन्नू ने कहा, 'इससे हम फल का शिकार करते हैं, जैसे कुत्ते से जानवरों का शिकार।'

□ राहल सांकृत्यायन

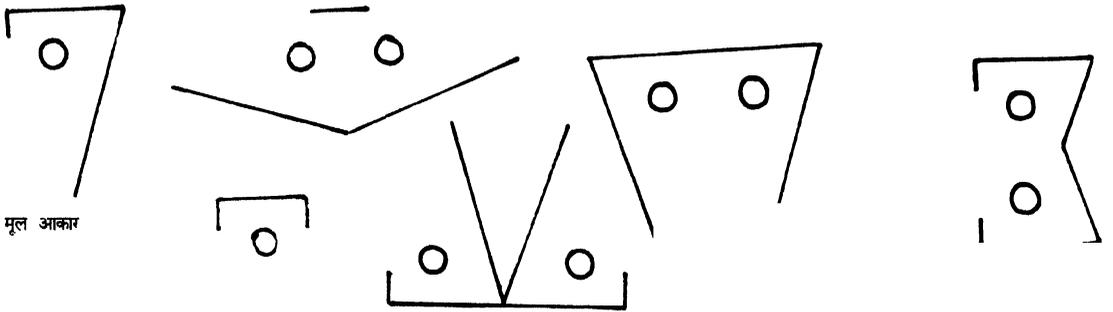


एक मजेदार खेल

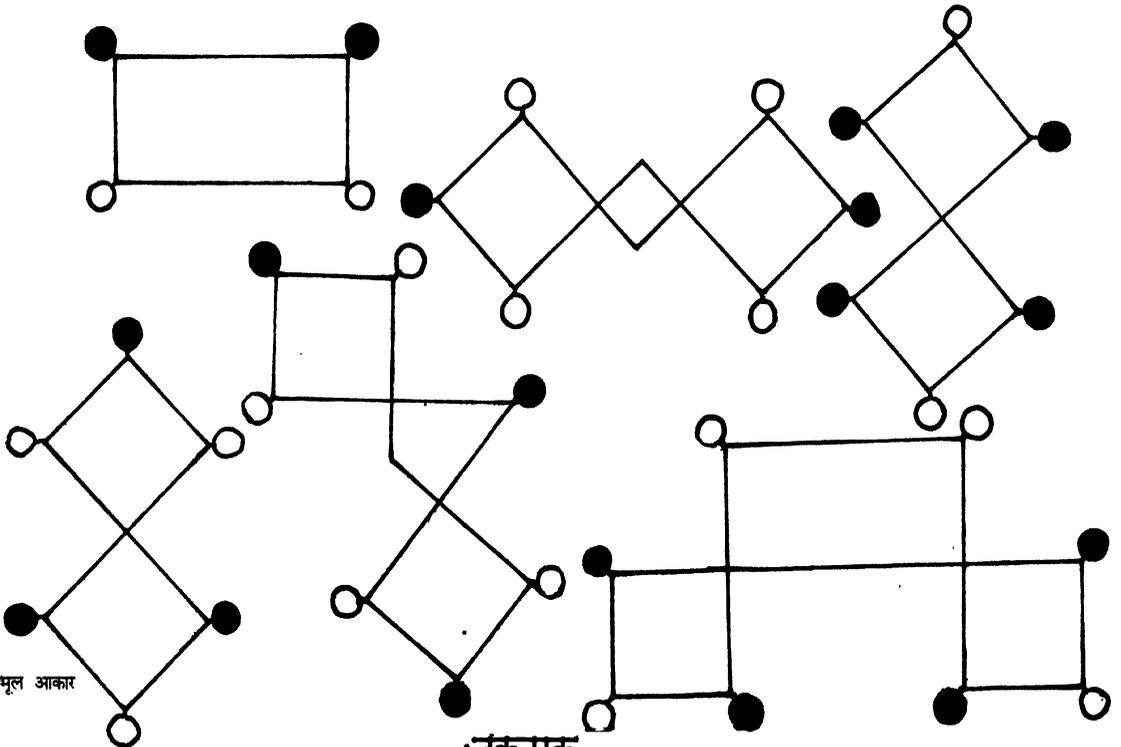
बिंब ढंछी प्रतिबिंब ढंछीतीर

इस खेल के लिए दर्पण की एक छोटी पट्टी की ज़रूरत पड़ेगी। पट्टी कम से कम 5 सेंटीमीटर लंबी और 2 सेंटीमीटर चौड़ी होनी चाहिए। यदि दर्पण न मिले तो सिगरेट के पैकेट की चमकीली पन्नी से काम चल सकता है।

खेल शुरू करने से पहले दो सवालों पर विचार करो। जब तुम दर्पण के सामने खड़े होते हो तब



मूल आकार



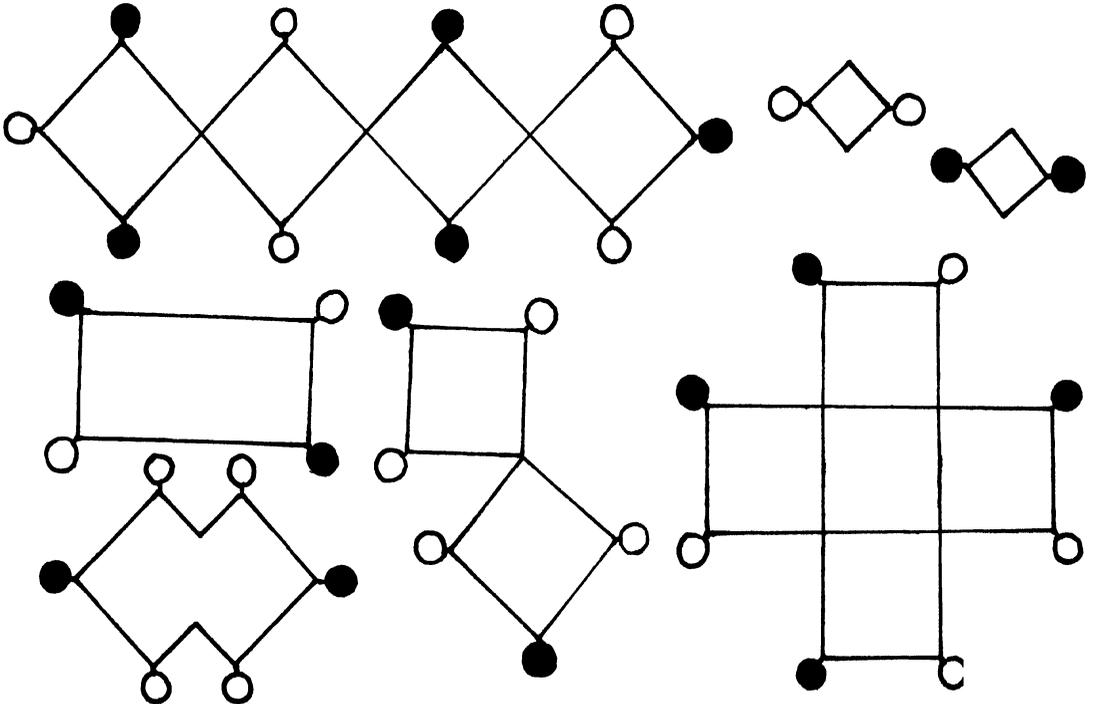
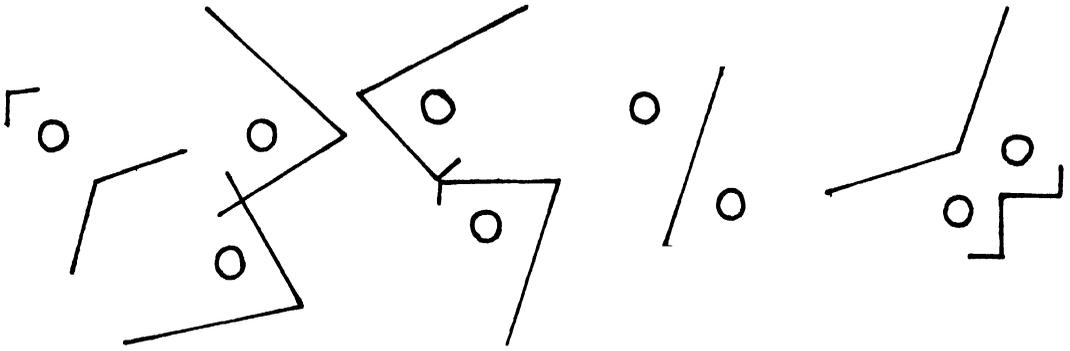
मूल आकार

चकमक

तुम्हारे बाएं हाथ का प्रतिबिंब दर्पण में किस तरफ होगा? दूसरा सवाल, दर्पण से अगर तुम एक मीटर की दूरी पर खड़े हो तो तुम्हारा प्रतिबिंब दर्पण के पीछे कितनी दूरी पर होगा? वैसे तो तुम जानते ही हो कि प्रतिबिंब कोई ठोस चीज़ नहीं है, इसलिए दर्पण के पीछे प्रतिबिंब ढूँढने की कोशिश मत करना।

यहां आकारों के दो समूह दिए गए हैं। प्रत्येक समूह का एक मूल आकार है। अब खेल यह है कि मूल आकार पर दर्पण खड़ा करके उसके समूह के बाकी आकार बनाना है। ये आकार बिंब तथा प्रतिबिंब के जोड़ से बनेंगे। आकार बनाने के लिए दर्पण को बिंब (मूल आकार) पर खड़ा करो और थोड़ा आगे-पीछे, बाएं-दाएं खिसका कर देखो।

हां, एक बात और। दोनों समूहों में एक-दो ऐसे आकार भी हैं जिनको बिंब-प्रतिबिंब के जोड़ से बनाना असंभव है। इन आकारों को पहचानो। यह भी बताओ कि इन्हें बनाना क्यों संभव नहीं है?



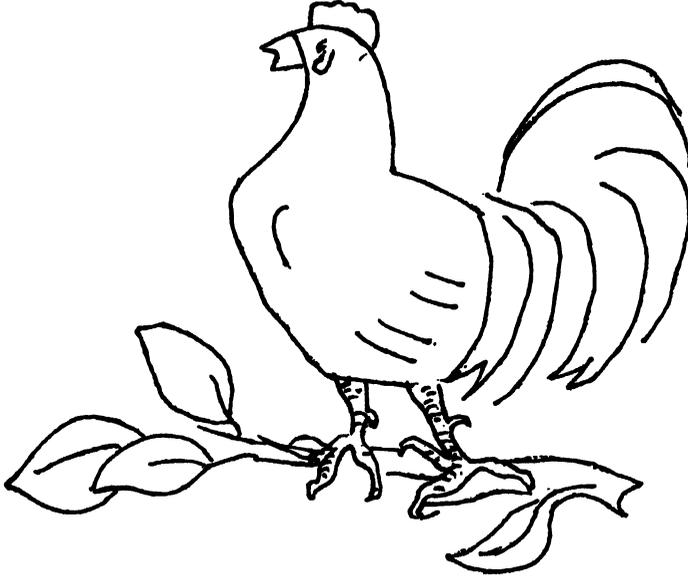
कुक्कड़-खूं

एक था मुर्गा। मुर्गे-का नाम था - खूं। पता है क्यों? क्योंकि वो कुक्कड़ कुं की जगह करता था - कुक्कड़ खूं!

खूं देखने में बहुत सुंदर था। वह बहुत बड़ा-बड़ा सा था - एकदम सफेद रंग का। उसकी सुंदर सी लाल रंग की चोंच थी और सिर के ऊपर लहराती हुई कलगी!

और खूं दिमाग से भी बड़ा चतुर था। एक लोमड़ी बहुत दिनों से उसे पकड़कर खाने की ताक में थी लेकिन हर बार खूं उससे बच निकलता था। इसलिए खूं अपने आप को बहुत चतुर समझने लगा था।

एक दिन खूं ने सोचा कि वो पेड़ की सबसे ऊंची डाल पर जाकर बैठेगा। वो उड़ा और पंख फड़फड़ाते हुए सबसे ऊंची वाली डाल पर बैठने ही वाला था कि अचानक ... जोर से हवा का एक झोंका आया और खूं ऊपर से गिर पड़ा।



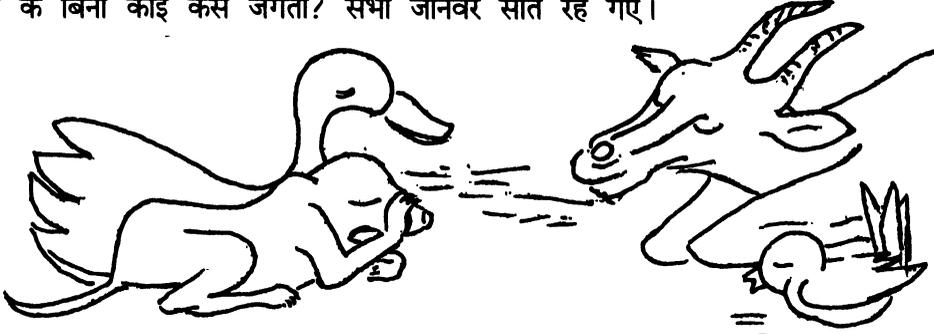
उसे देख कर सभी जानवर हंसने लगे। कुत्ता भों हो हो, भों हो हो कर के हंस रहा था। बताओ बकरी कैसे हंस रही थी? और घोड़ा कैसे हंस रहा होगा?

खूं को आ गया गुस्सा। उसका चेहरा फूल गया और आंखें लाल हो गईं। वो कौक-कौक-कौक करके सोचने लगा - ये लोग मेरा मजाक उड़ा रहे हैं। मैं इन्हें नहीं छोड़ूंगा। कल सुबह होने दो। इन सब को बता दूंगा।

अगले दिन सुबह तड़के ही मुर्गा उठ गया। इतनी सुबह थी कि अभी सूरज तक नहीं जागा था। खूं ने अपने पंख से अपनी आंख मली। फिर जोर से अंगड़ाई ली। फिर वो अपनी गर्दन लंबी करके जोर से कुक्कड़ खूं चिल्लाने ही वाला था कि वो रूक गया।

पर हंस रहे थे। खूं ने सोचा - अब देखना। अब पता चलेगा इनको मेरे ऊपर हंसने का क्या मतलब होता है।

और जब मुर्गे ने कुक्कड़ू किया नहीं तो कोई जानवर जगा ही नहीं। भला मुर्गे की बांग के बिना कोई कैसे जगता? सभी जानवर सोते रह गए।



धीरे-धीरे सूरज ऊगा। पहले वो दूर के पहाड़ों के ऊपर आया। फिर उसका चेहरा पेड़ों के ऊपर भी दिखाई देने लगा। लेकिन अभी भी सारे जानवर सोते ही रहे।

और सोते-सोते पता है वो क्या कर रहे थे? वो खुरटि ले रहे थे। कुत्ता कर रहा था भौर्र-र्र भौर्र र्र र्र। बताओ बकरी कैसे खुरटि ले रही होगी? और घोड़ा कैसा खुरटा ले रहा होगा।

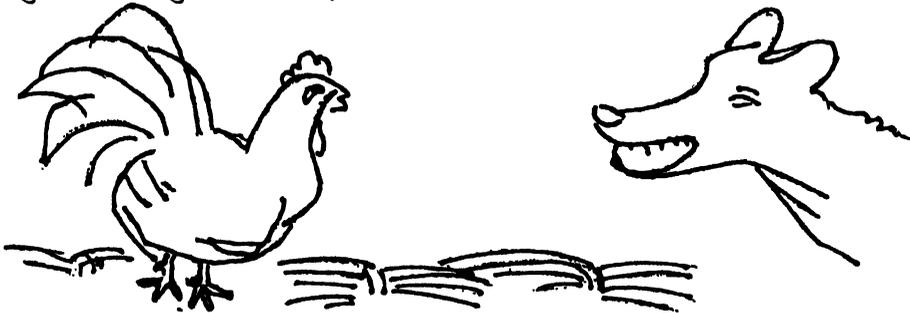
धीरे-धीरे सूरज और भी ऊपर चढ़ गया। अब मुर्गे को लगी भूख। उसने इधर देखा, उसने उधर देखा। उसने ऊपर देखा, उसने नीचे देखा। फिर उसे याद आया कि घोड़े के लिए बहुत सारे चने रखे होंगे। खूं हमेशा कोशिश करता था कि घोड़े के लिए रखे चने खा ले। लेकिन घोड़ा खाने ही नहीं देता था। आज खूं को लगा कि घोड़ा तो सो रहा है, इसलिए अब मौका है।

मुर्गा झाड़ से उतर कर आया और चने खाने लगा। उसने खूब चने खाए। खाता गया, खाता गया, खाता गया। इतना खाया, इतना खाया कि वो फूलकर एकदम गेंद की तरह गोल मटोल कुप्पा हो गया। उसने एक बड़ी सी डकार ली और धब्ब से बैठ गया। अब उससे चलते भी नहीं बनता था।

तब पता है वहां पर कौन आया? लोमड़ी!

लोमड़ी ने देखा अरे वाह ! मुर्गे से तो चलते ही नहीं बनता है। अब बच कर कहां जाएगा।

मुर्गा बेचारा बुरी तरह घबड़ा गया। उसने डर के मारे एक कदम पीछे हटने की



चकमक

कोशिश की लेकिन उससे तो हिलते ही नहीं बना।

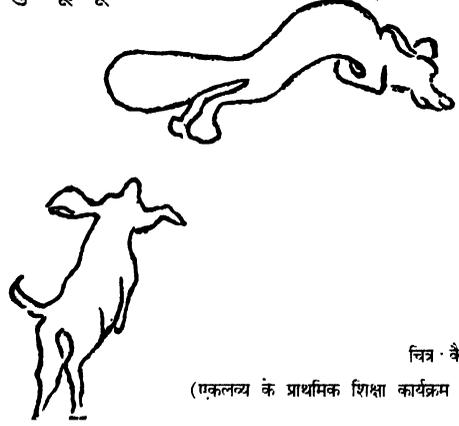
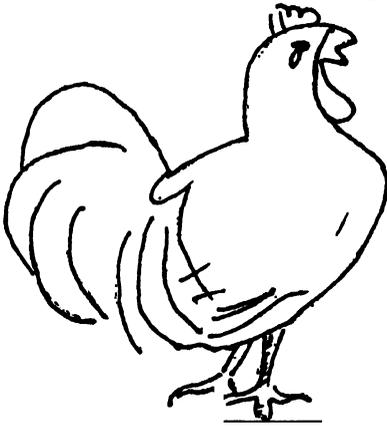
अब लोमड़ी उसकी तरफ बढ़ने लगी। उसका मुंह खुला हुआ था। उसके पैने-पैने दांत चमक रहे थे। उसकी लाल-लाल जीभ लपलपा रही थी। और उसके मुंह से लार टपक रही थी। 'मैं तुमको खा जाऊंगी,' लोमड़ी ने कहा। 'मैं तुमको खा जाऊंगी।'

लोमड़ी और भी पास आ गई। खूं को उसकी काली नाक और चमकती आंखें दिखने लगी। लोमड़ी खूं पर झपट कर उसकी गर्दन दबोचने ही वाली थी कि अचानक ...

मुर्गे को कुछ याद आ गया। वो जोर से चिल्लाया-कूकड़ूं खूं।

ये सुनते ही सभी जानवर जाग उठे। उन्होंने देखा कि लोमड़ी मुर्गे पर झपटने ही वाली है। कुत्ता तेजी से दौड़ता हुआ आया और जोर से लोमड़ी की पूंछ काट खाई। बकरी दौड़ती हुई आई जोर से लोमड़ी को सींग मार दिया। और घोड़ा दौड़ता हुआ आया और लोमड़ी को इतनी जोर की एक दुलती मारी की लोमड़ी गुलाटी खाती हुई हवा में उछल पड़ी। और जैसे ही ज़मीन पर वापिस गिरी तो फिर वहां से जो भागी कि अभी तक नहीं दिखी।

और उस दिन के बाद से मुर्गा भी रोज कूकड़ूं कूं करता चला आ रहा है। ●



चित्र - कैरन

(एकलव्य के प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम से)

गिजुभाई (पृष्ठ 9 में आगे)

ध्यान से देखने पर मालूम हुआ कि मैना और उसके बच्चे ज़मीन पर पड़ी किसी चीज़ को खा रहे थे। जब में धीमी चाल से उनके पास पहुंचा तो मैंने देखा कि वे पंखों वाली दीमकों को खा रहे थे। दीमकें उड़ती-उड़ती अपने बमीठे में से बाहर आ रही थीं और मैना अपने बच्चों के साथ उनका नाश्ता कर रही थी। वे सब अपने इस बहुत मीठे भोजन में मगन हो गए थे। इतने में सतभइयों का एक दल आ पहुंचा, और कुछ देर के झगड़े के बाद सब मिलकर मौज़ के साथ नाश्ता करने में जुट गए। फिर कुछ ही देर में कांव-कांव करता हुआ कौओं का दल वहां आ पहुंचा। पहले एक कौआ आया, फिर दो कौए आए, बाद में चार, पांच करते-करते दस-पंद्रह कौए आ पहुंचे। कौओं की यह

आदत ही है कि वे कांव-कांव की आवाज़ करके सबको इकट्ठा कर लेते हैं। कौओं के दल ने मैनाओं को और सतभइयों को खदेड़ दिया। बाद में मैना और उसके बच्चे फिर अपने घोंसले में नहीं लौटे। वे खुली हवा का आनंद लेते-लेते एक पेड़ पर से दूसरे पर और दूसरे से तीसरे पर उड़ते चले गए। फिर तो उड़ते-उड़ते वे कहीं के कहीं पहुंच गए।

हमारे आंगन में मैनाएं तो रोज़ ही आती हैं और काफी बड़ी संख्या में आती हैं, लेकिन हमको पता नहीं चल पाता कि उनमें हमारी वह मैना और उसके वे बच्चे भी आते हैं या नहीं। ●

36

करते-करते दस-पंद्रह कौए आ पहुंचे। कौओं की यह

चमक

मूल गुजराती से अनुवाद : काशीनाथ त्रिवेदी



मैं अपने कुछ साथियों के साथ पक्षी निरीक्षण के लिए निकला। मेरा यह पहला मौका था। हम एक पगडंडी पर चलते हुए अचानक एक पुराने मंदिर की ओर जाने वाले रास्ते पर मुड़ गए। तभी सामने एक टीला दिखाई दिया।

चार-पांच किशोरों की हमारी टोली जैसे ही टीले पर चढ़ने को हुई। अचानक हमारी दीदी की नज़र एक पुराने वृक्ष की सबसे निचली डाली पर गई और उन्होंने कहा, “खकूसट”।

मैंने सोचा, अरे यह तो उल्लू है।’ लेकिन फिर ख्याल आया कि अरे पागल, सुबह साढ़े छह बजे भी उल्लू दिखता है कहीं? मैं दबे पांव उसकी ओर

बढ़ा, लेकिन आश्चर्य यह कि दूसरे पक्षियों की तरह मुझे देखने पर भी यह पक्षी उड़ा नहीं। बल्कि गांव के किसी भोले बच्चे की तरह मुझे टक-टकी लगाकर देखता रहा। बाद में मालूम हुआ कि उल्लू की नस्ल का यह पक्षी पुराने वृक्ष-कुंजों में, पुराने मंदिरों में तथा शहर के आसपास निवास करता है।

नर और मादा दोनों ही खकूसट एक जैसे दिखाई देते हैं। हां तो दोस्तों, किसी भी पुराने वृक्ष पर या मंदिर पर कहीं भी इसे देखें तो याद रखना यह काले-भूरे, छोटे-छोटे धब्बों वाला और ‘किटू-किटू’ की आवाज़ करने वाला यह पक्षी खकूसट ही है।

□ अनिरुद्ध घोड़पकर, धार

मेरा प्यार

मैं प्यार करता हूँ -

जो तुफानों को प्यार करते हैं

जो पसीने की कमाई से पेट भरते हैं।

मैं प्यार करता हूँ -

जो अन्याय, अत्याचार के खिलाफ

निरंतर संघर्ष करते हैं

हर मुसीबत के सामने

फौलाद की तरह तने रहते हैं।

मैं उन्हें प्यार करता हूँ -

जो समस्याओं की आग पर चल रहे हैं

नित नया निर्माण करने में खप रहे हैं।

मैं उन्हें बेहद प्यार करता हूँ -

जो आदमी से प्यार करते हैं

उन्हीं के लिए जीते हैं

उन्हीं के लिए मरते हैं।

□ आशीष त्रिपाठी, दसवीं, नागौद, सतना



(1)

इस आकार के खानों में 1 से 13 तक की संख्याओं को इस तरह भरो कि प्रत्येक खड़ी पंक्ति (I, II, III) और आड़ी पंक्ति (IV) की संख्याओं का जोड़ समान हो।



III \

IV

(2)

अलगू-बलगू जुड़वां और हमशक्ल भाई हैं। उनके पास दो कंचे हैं - एक काले रंगे का और दूसरा लाल रंग का। मज़ेदार बात यह है कि जिसकी जेब में काला कंचा होता है वह झूठ बोलता है और लाल कंचा होने पर सच।

एक दिन उनके पिता के दोस्त कई दिनों बाद उनके घर आए। वे अलगू और बलगू को पहचान नहीं पाए। उनमें से एक ने कहा, "मैं बलगू हूँ और मेरी जेब में काला कंचा है।"

बताओ वह बलगू है कि अलगू?

(3)

नीचे एक शब्द समूह दिया है। इसमें कौन-सा शब्द नहीं होना चाहिए: इसाई, हिंदू, ब्रम्हचारी, बौद्ध, सिख, मुस्लिम।

(4)

शतरंज की बिसात से तुम परिचित होंगे ही। उसमें 64 चौकोर खाने होते हैं - 32 काले और 32 सफेद। इन 64 खानों को हम 32 आयतों से ढक सकते हैं (यानी प्रत्येक आयत 2 खानों को ढकेगा)।

अब अगर हम बिसात की ऊपरी पंक्ति के बाएँ और निचली पंक्ति के दाएँ कोने के खाने निकाल दें यानी सिर्फ 62 खाने रहें। क्या इन 62 चौकोर खानों को 31 आयतों से ढका जा सकता है?

(5)

दो घुड़सवार एक सनकी राजा के चक्कर में फंस गए। राजा ने उनसे कहा, सामने दिखने वाले खंडहर पर जिसका घोड़ा बाद में पहुंचेगा उसे इनाम दिया जाएगा। यानी तेज नहीं बल्कि सुस्त घोड़े को इनाम दिया जाना था। बड़ी मुसीबत! दोनों घुड़सवार अपने घोड़ों पर सवार एक ही जगह खड़े। कोई भी बढ़ने को तैयार नहीं। तुम कहोगे यह दौड़ हो ही नहीं सकती। लेकिन हम कहते हैं हई। सोचो कैसे?

(6)

इस श्रृंखला को पूरा करो :

88, 22, 66, 33, 44....

(7)

इस तालिका के खाली स्थानों में कौन सी संख्याएं आएंगी?

	6	3	5	2
7	29		23	5
9	39	15	31	
4		5	11	2
8	34	13		6

एक गांव का रास्ता आठ फुट चौड़ा है। एक तरफ से ट्रक वाला आ गया और दूसरी तरफ से बस वाला। बताओ उनका निकलना कैसे संभव होगा?

□ हरीशंकर मलैया, आठवीं पांजराकला, होशंगाबाद

सर पे लाल टोपी.....या?

तीन सीढ़ियों पर तीन व्यक्तियों को क्रम से बिठाया गया। और उनसे कहा गया कि वे अपने से आगे वाले को देख सकते हैं पर पीछे वाले को नहीं।

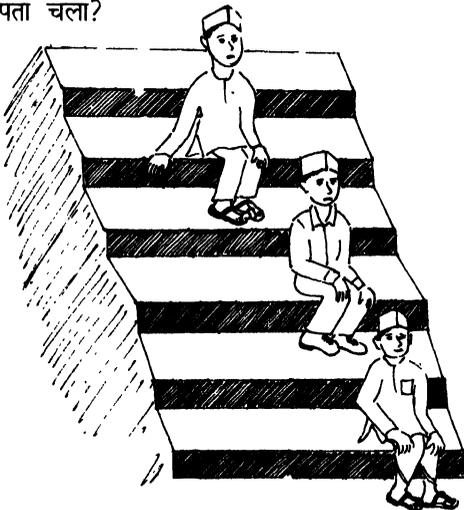
अब तीन लाल और दो हरी टोपियां लाई गईं। ये टोपियां इन व्यक्तियों को दिखाई गईं। इसके बाद एक-एक टोपी हरेक के सिर पर रख दी गई। टोपी इस तरह रखी गई कि व्यक्तियों को पता न चले कि उनके सिर पर किस रंग की टोपी है। बची हुई दो टोपियों को छुपा दिया गया।

अब प्रत्येक से यह सवाल पूछा गया कि क्या वह बता सकता है कि उसके सिर पर किस रंग की टोपी है। सबसे पहले सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर बैठे व्यक्ति से पूछा गया। उसने कुछ देर सोचकर कहा, "नहीं।"

फिर बीच की सीढ़ी पर बैठे व्यक्ति से पूछा गया। उसने थोड़ी देर विचार किया और फिर कहा, "नहीं।"

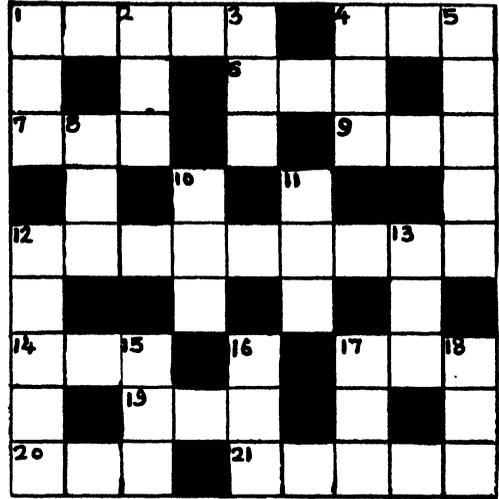
अब बारी थी अंतिम सीढ़ी पर बैठे व्यक्ति की। उसने तुरंत कहा, "ज़रूर।" और फिर अपनी टोपी का रंग बता दिया।

क्या तुम बता सकते हो कि अंतिम सीढ़ी पर बैठे व्यक्ति की टोपी का रंग क्या था और उसे यह कैसे पता चला?



चकमक

वर्ग पहेली : 5



संकेत: बाएं से दाएं

1. बदलाव (5)
2. समूह या समुदाय (3)
3. बीज से फूटने पर-पौधा बनता है (3)
4. उल्टी-सीधी एक समान, करती हूँ देखने का काम (3)
5. वाह राम में मुफ्तखोर (3)
6. श्रवणेन्द्रिय पर किसी कीड़े के न चलने के कारण बिलकुल न सुनना, एक मुहावरा (2,2,1,1,3)
7. गरमी में शरीर से निकलने वाला पानी (3)
8. सीधी-सादी लड़की का नाम (3)
9. जो तुम्हारा प्रिय हो (3)
10. वृक्ष की शाखा (3)
11. एक खेल जिसमें दो दल रस्सी को अपनी तरफ लाने की कोशिश करते हैं (5)

संकेत : ऊपर से नीचे

1. विकृत तपन का गिरना (3)
2. देश (3)
3. नल में प्रथम व्यंजन, प्रतिलिपि (3)
4. राय (3)
5. उल्टा मगज उसके बाद गाना (5)
6. विश्वास (3)
7. धलचर कबूतर में आयुर्वेद के महापंडित (3)
8. एक, दो, तीन, चारक्या सीखे? (3)
9. काट या पल की गोलमाल से पूरा बदलाव (5)
10. 1857 की क्रांति को इस नाम से जाना जाता है (3)
11. बढ़ई, सुर में आधी ताल (3)
12. अचानक उल्टा साहस (3)
13. लोभ (3)

पहेली: एक में अनेक

मध्य पंक्ति के खानों में भरना है एक शब्द
शब्द के अक्षर-मात्राएं रहें तुम्हारे मध्य

मध्य पंक्ति के शब्द को उलट-पुलट दो
ऊपर या नीचे की पंक्ति में उनको जड़ दो

अब ऊपर और नीचे कदम बढ़ाओ
पर हर बार ढंग एक अपनाओ

पर जोड़ो हर बार एक नई मात्रा या अक्षर
देखो फिर आती है नई बात उभरकर

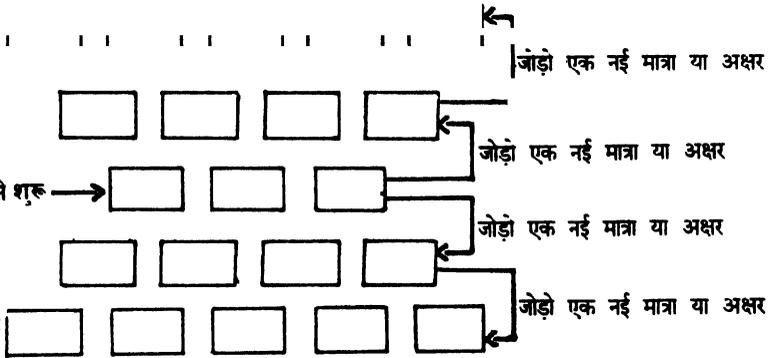
संकेत : मन की इच्छा

रहने की जगह

मेहनतकश लोग करते हैं

भई वाह! क्या बात है!

जिसकी संपत्ति या चीज़ जिसकी है



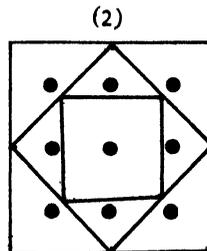
वर्ग पहेली 4 : हल

1 च		2 चा		3 अ	न	4 व	र	त
ह		5 द	श	क		ज		
6 च	को	र		ब		7 न	8 क	ली
हा			9 आ	र	10 सी		न	
11 ना	12 ट	की	य		13 खा	ट	क	14 ना
	ख		15 त	16 घा	ना			म
17 ज	ना	18 ब		नी		19 स	ब	क
		क		20 घ	र	म		र
21 अ	प	रा	जि	त		ता		ण

उत्तर : जनवरी माह के

- (1) गुण अ : 5 से विभाजित कर सकते हैं
गुण ब : 3 से विभाजित करने पर शेष 2
गुण स : भाज्य संख्या से 1 कम या अधिक
(4) पांच सीट

$$39 = \frac{4 \times 4 - 0.4}{0.4}$$



$$50 = \frac{4}{0.4} \times \frac{\sqrt{4}}{0.4}$$

$$62 = (4+4)^{\sqrt{4}} - \sqrt{4}$$

$$100 = \frac{44}{0.44}$$

40

चकमक



छाया : विश्व प्रिया



12641

